श्रीमन्माध्व गौड़ेश्वर वैष्णवाचार्य श्रीचैतन्यकृष्णाश्रय तीर्थ स्वामीजी
(श्रीअतुलकृष्ण गोस्वामीजी) महाराज तथा श्रीमन्माध्व गौड़ेश्वर वैष्णवाचार्य श्री
श्रीभूतिकृष्ण गोस्वामीजी महाराज की पावन स्मृति में-

गौड़ीय नित्य पाठावली

श्रीमन्माध्व गौड़ेश्वर वैष्णवाचार्य श्रीपुण्डरीक गोस्वामी जी
महाराजश्री की आज्ञा से प्रकाशित

प्रकाशक :

श्रीमन्माध्व गौड़ेश्वर वैष्णवाचार्य श्रीपुण्डरीक गोस्वामीजी महाराज

प्रथम संस्करण :

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, विक्रम सम्वत २०८०

५३९-गौराब्द

प्राप्ति स्थल :

वैजयन्ती आश्रम, ज्ञान गुदड़ी, श्रीधाम वृन्दावन-281121

मो॰ 9300665294, 7696644494

सर्वाधिकार संरक्षित :

वैजयन्ती विद्यापीठ

विषयानुक्रमणिका

नित्यकर्म प्रकरण

1.श्रीमन्माध्व गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय (परिचय) 9
2. प्रातः स्मरण 13
3.श्रीनन्दनन्दन स्तोत्र 14
4. स्नान मन्त्र 15
5. श्रीकृष्ण प्रातः स्मरण कीर्तन 16
6. भूत शुद्धि 17
7. तिलक धारण विधान 19
8. गोपालमन्त्रराज जप विधान 23
9. आचार्य परम्परा प्रणामः 24
10. स्व इष्ट स्वरूप ध्यान 25
11. श्रीगोपालमन्त्रराज(विनियोग आदि विधि) 26
12. जप समर्पण 28
13. महामन्त्र जप विधान 28
14. श्रीनारायण कवच 29
15. श्रीमद्भागवत मंगलाचरण 35
16. चतु:श्लोकी भागवत, एकश्लोकी रामायण 36

विज्ञप्ति प्रकरण

17. श्रीकृष्ण-श्रीराधा प्रणामः 37
18. ललितादीनां सखी प्रणामः 38
19. मञ्जरी-गुरुरूप सखी-तुलसी प्रणामः 39
20. पञ्च तत्व- गौर-नित्यानन्द प्रणामः 40
21. श्रीराम-नृसिंह-दशावतार प्रणामः 41
22. सर्वायुध-वेणु प्रणामः 42

23. श्रीगोवर्धन-यमुना-वृन्दावन प्रणामः 43
24. भगवद्पार्षद-गोपीश्वर-महाभागवत प्रणामः 44
25. आचार्य प्रणामः 45
26. गुरु प्रणामः 46
27. क्षमा प्रार्थना 46

स्तोत्र प्रकरण

28. श्रीगोपाल स्तवराज स्तोत्रं 48
29. श्रीगोपालाष्टकं 50
30. श्रीरूपगोस्वामी कृत कृष्णविज्ञप्ति 51
31. श्रीगोपालभट्टगोस्वामी कृत कृष्णविज्ञप्ति 51
32. श्रीराधिका अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं 52
33. श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तवराज 54
34. वृत्रकृता श्रीविष्णुस्तुतिः 57
35. श्रीराधा कैंकर्य प्रार्थना चतुःश्लोकी 58
36. श्रीयमुनाष्टकं 59
37. भीष्म स्तुति 60
38. श्रीदामोदराष्टकं 62
39. श्रीजयदेव कृत मंगल गीत 63
40. दशावतार स्तोत्रं 64
41. श्री जगन्नाथाष्टकं 66
42. श्रीशचीतनयाष्टकं 68
43. श्रीकृष्णचैतन्य द्वादशनाम स्तोत्रं 69
44. श्रीकृष्णचैतन्य चंद्रस्य सहस्त्रनाम स्तोत्रं 70
45. शिक्षाष्टकं 82
46. श्रीचैतन्य महाप्रभु मुख निःसृत शिवाष्टकं 83
47. श्रीषड्गोस्वाम्यष्टकं 84
48. श्रीगुरुदेवाष्टकं 86
49. श्रीगोपालभट्टाष्टकं 88
50. श्रीगोपालभट्ट स्तवक पञ्चक 89

51. नगर संकीर्तन 90
52. श्री श्रीवैष्णवाभिधानं (वैष्णव नामस्तोत्रं) 91
53. श्रीगजेन्द्र मोक्ष 96
54. विष्णु सहस्रनाम 100
55. रास पंचाध्यायी 116

विधि प्रकरण

56. तुलसी पूजन व अर्चन 142
57. तुलसी आरती 143
58. भगवद् शयन मन्त्र (विधि) 144
59. भगवद् उत्थापन मन्त्र (विधि) 144
60. भगवद् भोगार्पण मन्त्र (विधि) 145
61. बलिदान मन्त्र (विधि) 148
62. महाप्रसाद ग्रहण मन्त्र 149
63. विष्णुपादोदक ग्रहण मन्त्र 149
64. श्रीराधारमण जी की आरती 150

श्रीमन्माध्व गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय

अखिल रसामृत सिन्धु सार सर्वस्व विग्रह सच्चिदानन्दघन प्रभु श्रीकृष्ण 'स्वयं भगवान' हैं और परमकरुणामयी महाभावस्वरूपा स्वामिनी श्रीराधा जी उनकी आनन्ददायिनी ह्लादिनी शक्ति हैं। श्रीस्वामिनीजी के पूर्णतम प्रेम का आस्वादन करने के लिए ही भगवान श्रीकृष्ण कलिकाल में राधाभाव एवं गौरकान्ति धारण कर श्रीचैतन्य महाप्रभु जी के रूप में धराधाम पर अवतरित हुए हैं। श्रीकृष्ण का नित्य-लीला परिकर भी श्रीमन्महाप्रभु के साथ उनके पार्षदों एवं गौर-भक्त-वृन्द के रूप में प्रकट हुआ है।

श्रील माधवेन्द्र पुरी जी इस कलियुग में भावभक्ति का सूत्रपात करने वाले प्रेम-कल्पतरु स्वरूप हैं। उनके द्वारा जिस प्रेमलक्षणा भक्ति का बीजारोपण हुआ, उसके अंकुरण से श्रीमन्महाप्रभु के इस 'गौड़ीय-सिद्धान्त' रूपी विशाल वृक्ष का प्राकट्य हुआ है, जिसकी विभिन्न शाखायें आज श्रीमन्माध्व-गौड़ीय-सम्प्रदाय कहलाती हैं।

प्रश्न- 'मन्माध्व' गौड़ीय सम्प्रदाय कैसे ?

उत्तर- श्रीब्रह्माजी से समारम्भ जगद्गुरु श्रीमन्मध्वाचार्य जी की परम्परा से हमारे सम्प्रदाय के मूलपुरुष श्रील माधवेन्द्र पुरी जी को 'अष्टादशाक्षर श्रीगोपालमन्त्रराज' की प्राप्ति हुई थी, इसी मन्त्र-सम्बन्ध को संबोधित करते हुए हम 'श्रीमन्माध्व' का अभिधान करते हैं। इसके अन्यत्र गौड़ीय सम्प्रदाय की अपनी स्वतन्त्र उपासना, प्रणाली, सिद्धान्त और दर्शन है।

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु हमारे सम्प्रदाय के 'इष्ट' हैं तथा षड्-गोस्वामी-गण गौड़ीय सिद्धान्त का स्थापन करने वाले परमाचार्य हैं। हमारे साध्य और साधन दोनों ही विषयों में 6 गोस्वामियों का अपूर्व स्थान है। साधक अवस्था मे ये ही हमारे लिए आदर्श हैं और सिद्धावस्था में हमारा आश्रय इनका मञ्जरी स्वरूप ही है। षड्-गोस्वामी गणों की कृतियाँ प्रत्येक गौड़ीय वैष्णव के लिए पद-वाक्य-प्रमाण हैं और उनकी वाणी 'श्रुति' समान है। श्रीमद्भागवत महापुराण हमारा परम प्रमाण है।

प्रश्न- सम्पूर्ण गौड़ीय सिद्धान्त संक्षिप्त में कैसे समझें ?

उत्तर- आराध्यो भगवान् व्रजेशतनयस्तद्धाम वृन्दावनं
रम्या काचिद् उपासना व्रजवधूवर्गेण या कल्पिता।
श्रीमद्भागवतं प्रमाणममलं प्रेमा पुमर्थो महान्
श्रीचैतन्य महाप्रभोर्मतमिदं तत्राग्रहो नापरः।।

व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण ही एकमात्र हमारे आराध्य हैं। उनका धाम श्रीवृन्दावन है। व्रज-गोपियों के द्वारा अपनायी गयी उपासना अर्थात 'गोपी-भाव' ही हमारी उपासना पद्धति हैं। परम निर्मल श्रीमद्भागवतजी ही एकमात्र हमारे लिये परम प्रमाण है और पंचम पुरुषार्थ 'प्रेम' ही हमारा प्रयोजन है। यही श्रीचैतन्यमहाप्रभुजी का मत है और इससे परे हमारे लिये कोई भी आग्रह नही है।

उपसनात्मक तत्व त्रय-

सम्बन्ध तत्व- श्रीकृष्ण अभिधेय तत्व- भक्ति प्रयोजन तत्व- प्रेम

प्रश्न- गौड़ीय परम्परा में भक्ति का स्वरूप क्या है ?

उत्तर- अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञानकर्माद्यनावृतम्।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमा।।

श्रीकृष्ण की सेवा के अतिरिक्त किसी भी प्रकार की अभिलाषा (कामना) से शून्य; ज्ञान-कर्म आदि से अनावृत अर्थात ज्ञान-कर्म का स्वरूप त्याग नहीं अपितु उनके प्रति साधन-बुद्धि का त्याग; अत्यन्त अनुकूल भाव से श्रीकृष्ण का अनुशीलन अर्थात मन,वाणी और काया से श्रीकृष्ण के प्रति 'तत्सुख सुखित्व' का भाव रखना ही उत्तमा भक्ति का स्वरूप है।

श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी शाखा की गुरु परम्परा

श्रीमन्नारायणो ब्रह्मा नारदो व्यास एव च।
श्रीमध्वः पद्मनाभश्च नृहरिर्माधवस्तथा॥
अक्षोभः जयतीर्थश्च ज्ञानसिन्धुः दयानिधिः।
विद्यानिधिश्च राजेन्द्रः जयधर्ममुनिस्तथा॥
पुरुषोत्तम ब्रह्मण्यः व्यासतीर्थ मुनिस्तथा।
ततो लक्ष्मीपतिः श्रीमान्माधवेन्द्रयतीश्वरः॥
ततः श्रीकृष्णचैतन्यः प्रेमकल्पद्रुमोभुवि।
ततः गोपालभट्टश्च भावनिष्ठाफलप्रदः॥
श्रीदामोदरदासश्च पूर्णानुग्रहकारकः।
इति स्वगुरुपर्यन्तं नाम ग्राहं च वन्दनं॥

श्रीमन्महाप्रभु द्वारा पट्टाभिषिक्त श्रीपाद गोपालभट्ट गोस्वामीजी के द्वारा षड्-सन्दर्भादि ग्रन्थों में गौड़ीय सम्प्रदाय के सिद्धान्त की स्थापना की गयी है और सम्प्रदाय के उपास्य देव स्वयंभू श्रीराधारमणलाल जी का प्राकट्य हुआ है।

श्रीगोपालभट्टीय प्रणाली-

धर्मशाला- श्रीगोवर्धन
धाम- श्रीबद्रीनाथ
नदी- श्रीयमुना
मन्त्र- श्रीगोपाल मन्त्रराज
इष्ट- श्रीराधारमण देव
रस- शृंगार
सम्प्रदाय- श्रीमन्माध्व गौड़ीय
उपासना- श्रीवृन्दावनस्थ श्रीराधाकृष्ण युगल

क्षेत्र- श्रीनवद्वीप
निवास- श्रीवृन्दावन
तीर्थ- श्रीराधाकुण्ड
मुनि- श्रीनारद
प्रभु- श्रीकृष्णचैतन्य देव
भाव- परकीया
दर्शन- अचिन्त्यभेदाभेद वेदान्त
आचार्य- श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी

अहो भाग्यमहो भाग्यं गौरमार्गानुवर्तिनाम् ।
देवो राधारमण यत्र यद्गुरुर्गुणमञ्जरी ।।

मेरा अहोभाग्य है! अहोभाग्य है! जो मैं श्रीगौरांग महाप्रभु के मार्ग का अनुसरण करता हूँ। जहाँ इष्टदेव के रूप में स्वयं श्रीराधारमणजी हैं, और गुरुतत्व के रूप में स्वयं श्रीगुणमञ्जरी हैं।

अथ नित्यकर्म विधानं

प्रातः स्मरण

वैष्णव को प्रातः जागकर सर्वप्रथम भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण करना चाहिए-

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण पाहि माम् ।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण रक्ष माम् ।।

(साधनामृतचन्द्रिका)

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

तत्पश्चात भगवान श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु और श्रीगुरु तत्व का स्मरण करें-

नमो महावदान्याय कृष्ण-प्रेम-प्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्णचैतन्य नाम्ने गौरत्विषे नमः ।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

तदनन्तर भूदेवी को प्रणाम कर भूमि पर चरण रखें-

समुद्रवसने देवी पर्वत स्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

श्रीनन्दनन्दन स्तोत्र

[जो नित्य प्रति प्रातः उठकर इस स्तोत्र का पाठ करता है,
उसके नेत्रों के समक्ष श्रीकृष्ण आनन्दपूर्वक प्रकट हो जाते हैं।]

बालं नवीनशतपत्रविशालनेत्रं बिम्बाधरं सजलमेघरुचिं मनोज्ञम् ।
मन्दस्मितं मधुरसुन्दरमन्दयानं श्रीनन्दनन्दमहं मनसां नमामि ॥१॥

मञ्जीरनूपुररणन्नवरत्नकाञ्ची श्रीहारकेसरिनखप्रतियन्त्रसंघम् ।
दृष्टयार्तिहारिमषिबिन्दुविराजमानं वन्दे कलिन्दतनुजातटबालकेलिम् ॥२॥

पुर्णेन्दुसुन्दरमुखोपरि कुञ्चिताग्राः केशा नवीनघननीलनिभाः स्फुरन्ति ।
राजन्त आनतशिरः कुमुदस्य यस्य नन्दामत्मजाय सबलाय नमो नमस्ते ॥३॥

श्रीनन्दनन्दस्तोत्रं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
तत्रेत्रगोचरं याति सानन्दं नन्दनन्दनः ॥४॥

स्नान मन्त्र

स्नान करते समय वैष्णव निम्न श्लोक पढ़े-

गंगे! च यमुने! चैव गोदावरि! सरस्वति!
नर्मदे! सिन्धु! कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

श्रीकृष्णवल्लभे देवि! यमुने! तापहारिणी।
सेवायै स्नातुमिच्छामि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

श्रीराधा सम सौभाग्यं सर्वतीर्थ प्रवन्दितम्।
प्रसीद राधिकाकुण्ड! स्नामि ते सलिले शुभे।।

श्रीकृष्ण प्रातःस्मरण कीर्तन

जयति जननिवासो देवकीजन्मवादो यदुवरपरिषत्स्वैः दोर्भिरस्यन्नधर्मम्।
स्थिरचर वृजिनघ्नः सुस्मित श्रीमुखेन व्रजपुरवनितानां वर्धयन् कामदेवम् ।।

स्मृते सकलकल्याण भाजनं यत्र जायते।
पुरुषस्तमऽजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।

विदग्ध गोपाल विलासिनीनां सम्भोग चिह्नान्कित सर्वगात्रम्।
पवित्र माम्नायगिराम् अगम्यं ब्रह्म प्रपद्ये नवनीतचौरम्।।

उद्गायतीनाम् अरविन्दलोचनं व्रजान्गनानां दिवमस्पृशद्ध्वनिः।
दध्नञ्च निर्मन्थन शब्दमिश्रितो निरस्यते येन दिशां अमंगलम्।।

(हरिभक्तिविलास)

भूत शुद्धि

श्रीभगवान की सेवा-पूजा शुरू करने से पहले हमे स्वयं की एक शुद्ध आध्यात्मिक रूप में भावना करनी चाहिए यथा-
" मैं सभी भौतिक संपर्कों से मुक्त, श्रीभगवान् का नित्य सेवक हूँ! "

भक्ति संदर्भ (अनुच्छेद 286) और हरि-भक्ति विलास (5.63-88) के अनुसार इसे भूत-शुद्धि (शारीरिक तत्वों की शुद्धि) कहा गया है।

श्रीभगवान् की पूजा किसी भौतिक देह के द्वारा नही की जा सकती, अतः दिव्य भगवान् की पूजा करने के लिए, उपासक को भी दिव्य होना चाहिए।

इस भाव की पुष्टि के लिए श्रीचैतन्यमहाप्रभु मुख निःसृत निम्नलिखित श्लोक का पाठ करना चाहिए-

नाहं विप्रो न च नरपतिर्नापि वैश्यो न शूद्रो
नाहं वर्णी न च गृहपतिर्नो वनस्थो यतिर्वा ।
किन्तु प्रोद्यन्निखिल-परमानन्द-पूर्नामृताब्धेः
गोपी-भर्तुः पद-कमलयोर्दास-दासानुदासः ।।

मनुष्य शरीर पंचमहाभूतों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) से निर्मित है। आचार्यों ने 'भूत-शुद्धि' हेतु नित्य भगवान के महाप्रसाद और चरणोदक ग्रहण करने का विधान बताया है।

वैष्णवों के लिए नित्य श्रीजगन्नाथ जी का निर्माल्य (सूखा) महाप्रसाद-कणिका और ठाकुरजी का चरणामृत ग्रहण करने का नियम लेना श्रेस्कर है।

निर्माल्य ग्रहण मन्त्र-

महाप्रसादे गोविन्दे नाम ब्रह्मणी वैष्णवे।
स्वल्प पुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते।।

चरणामृत ग्रहण मन्त्र-

अकालमृत्यु हरणं सर्वव्याधि विनाशनं।
विष्णोः पादोदकं पीत्वा शिरसि धारयाम्यहं।।

नोट- महाप्रसाद-कणिका ग्रहण करने का नियम एकादशी पर भी किया जाता है, इससे व्रत भंग नहीं होता है।

अथ तिलक धारण विधानं

वैष्णव को नित्य भगवद्सेवा / नियम आदि से पूर्व, अपनी गुरु-परम्परा व शाखा के अनुरूप ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करना अनिवार्य है। तिलक- गोपीचन्दन, तीर्थ-रज, मृत्तिका आदि किसी भी पदार्थ से लगाया जा सकता है।

विशेष-

• यदि मलय-चन्दन (चन्दन काष्ठ का लेप/ sandalwood paste) से तिलक धारण करना हो, तो वह विष्णु-निर्माल्य अर्थात भगवान का प्रसादी बचा हुआ चन्दन ही होना चाहिए। अमनिया (unoffered) चन्दन लगाने से पाप होता है, क्योंकि चन्दन जैसे श्रेष्ठ वस्तु के प्रथम भोक्ता एकमात्र भगवान श्रीकृष्ण ही हैं।

• दीक्षित वैष्णव को किसी भी स्थिति में अन्य सम्प्रदाय का तिलक अथवा त्रिपुण्ड आदि धारण करना सर्वथा निषेध है।

मस्तक पर ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण का मन्त्र-

ॐ श्री किरीट केयूर हार मकर कुण्डल चक्र शंख गदा पद्महस्त पीताम्बरधर श्रीवत्सांकित वक्षःस्थल श्रीभूमिसहित स्वात्मज्योतिर्दीप्तिकराय सहस्त्रादित्यतेजसे नमो नमः ।।

(सर्वार्थ सिद्धि के लिए मस्तक में इस किरीट मन्त्र का न्यास करे)

पूर्ण शुद्धि (अपरस) की स्थिति में श्रीगोपालमन्त्रराज से भी तिलक धारण किया जा सकता है।

द्वादश तिलक विधानं

हस्त प्रक्षालन करके बाएं हाथ में गोपीचन्दन घिसकर शलाखा अथवा उंगली से उसमे कामबीज 'क्लीं' लिखें। इष्टदेव का ध्यान कर तिलक धारण करें।
ललाटादि द्वादश स्थान में यथाविधि तिलक रचना करे ।

१. ललाट में- केशवाय नमः
२. उदर में- नारायणाय नमः
३. वक्षस्थल में- माधवाय नमः
४. कण्ठ में गोविन्दाय नमः
५. उदर के दाहिने भाग में-विष्णवे नमः
६. दाहिनी बाहु में- मधुसूदनाय नमः
७. दाहिने कंधे में त्रिविक्रमाय नमः
८. उदर के वाम भाग में- वामनाय नमः
९. बाएं बाहु में- श्रीधराय नमः
१०. बाएं कंधे में- हृषिकेशाय नमः

११. गर्दन के पीछे में-पद्मनाभाय नम:
१२. पीठ में- दामोदराय नमः

वासुदेवाय नमः कहकर हथेली पर लगे हुए अवशिष्ट चन्दन को शिखा पर पोंछकर, हाथों को प्रक्षालित करके जल विसर्जित कर दें।
श्रीराधारमणीय परम्परा में दीक्षित वैष्णव ऊर्ध्वपुण्ड्र के मध्य में श्रीमन्दिर की रसोई से प्राप्त श्यामश्री (अंगारक) को घिस कर, शलाखा से ऊर्ध्व-रेखा धारण करें।

।। ठा॰ श्री श्रीराधारमण लाल जी ।।

अथ अष्टादशाक्षर श्रीगोपालमन्त्रराज जप विधानं

आचमन-

ॐ केशवाय नमः

ॐ माधवाय नमः

ॐ नारायणाय नमः

हस्त प्रक्षालन-

ॐ हृषीकेशाय नमः

कुशा-प्रोक्षणी से अथवा बायीं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की उंगलियों से स्वयं पर जल छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः॥

पुण्डरीकाक्षः पुनातु! पुण्डरीकाक्षः पुनातु! पुण्डरीकाक्षः पुनातु!!

आसान शुद्धि मन्त्र-

आसान बिछाकर उसपर कुछ बूंद जल छिड़कर उच्चारण करें-

ॐ आधारशक्तये नमः

पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रमासनं कुरु।।

कुशा, रेशम, ऊँनी अथवा सूती वस्त्र का आसन रखें। श्रीगोपाल उपासना में पीत वर्ण का आसन और धारणीय वस्त्र सर्वोत्तम माना गया है। मन्त्र जप अपरस में किया जाता है, अतः वैष्णव अपना अलग आसान रखें, किसी अन्य पारिवारिक जन का प्रयोग न करें।

आचार्य परम्परा प्रणाम

राधानाथ समारम्भां गौरचन्द्रार्य मध्यमां।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरु परम्परां।।

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपद-कमलं श्रीगुरुन् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण रघुनाथान्वितं तं सजीवम् ।
साद्वैतं सावधूतं परिजन सहितं कृष्णचैतन्य देवम्
श्रीराधा-कृष्ण-पादान् सहगण-ललिता श्रीविशाखान्वितांश्च ।।

श्रीकृष्णचैतन्य कृपाभिसिक्तं श्रीरूपसख्यामृत पूर्णचित्तं।
श्रीराधिकाकृष्णसुखाब्धिमग्नं गोपालभट्टं प्रभुमाश्रयामि।।

अहो भाग्यमहो भाग्यं गौरमार्गानुवर्तिनाम् ।
देवो राधारमण यत्र यद्गुरुर्गुणमञ्जरी ।।

अस्मद गुरुभ्यो नमः।
अस्मद गुरु परम्परायै नमः।
श्रीमद् षड्-गोस्वामिने नमः।

जपमाला प्रणाम मन्त्र

अविघ्नं कुरु माले त्वं हरिनाम जपेषु च।
श्रीराधाकृष्णयोर्दास्यं देहि माले तु प्रार्थये।।

जपमाला को उपरोक्त मन्त्र का पाठ करके, इत्र लगाये।
तदनन्तर अपने इष्ट देव भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करें।

स्व इष्ट स्वरूप ध्यान

गौरांग सुन्दर शची नयनाभिरामं
राधा व्रजेन्द्र तनयोऽभयरूपमेकं।
गोपालभट्ट करुणाकृत कृष्णदेहं
तं राधिकारमणमीष्टम् अभीष्टमीढे।।

बर्हापीडं नटवरवपु: कर्णयो: कर्णिकारं
बिभ्रद् वास: कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम्।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन्गोपवृन्दै:
वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः।।

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्ष: स्थले कौस्तुभं।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणु: करे कंकणं।।
सर्वांगे हरि चन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणि:।।

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुंदरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे।।

ध्यान करने के पश्चात एकाग्र-चित्त से श्रीगुरुदेव द्वारा प्रदत्त
'अष्टादशाक्षर श्रीगोपालमन्त्रराज' का
श्रीगुरुदेव द्वारा निर्धारित संख्या में जप प्रारम्भ करें।

[निम्नलिखित विधि अनुष्ठानिक क्रम हेतु है। नित्यजप में प्रयोग नही किया जाता है। पुरुश्चरण/होम आदि अनुष्ठान में भी गुरुदेव की आज्ञा के बिना करना पूर्ण निषेध है]

अष्टादशाक्षर श्रीगोपालमन्त्रराजस्य विनियोग, न्यास तथा प्राणायाम विधिः

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीअष्टादशाक्षरगोपालमंत्रस्य श्रीनारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, गोपवेशधरः श्रीगोपालकृष्णो देवता, क्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, कृष्ण प्रकृतिः, दुर्गाधिष्ठात्री देवता, श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।।

ऋष्यादिन्यासः

अष्टादशाक्षर श्रीगोपालमंत्रस्य नारदाय ऋषये नमः। (शिरसे)
गायत्र्यै छन्दसे नमः। (मुखे)
गोपवेशधरः श्रीगोपालकृष्णाय देवतायै नमः। (हृदये)
क्लीं बीजे नमः। स्वाहा शक्तये नमः। (वक्षयोः)
कृष्ण प्रकृत्यै नमः। दुर्गा अधिष्ठात्र्यै नमः। (हृदये)

करन्यासः

क्लीं कृष्णाय अंगुष्ठाभ्यां नमः।
गोविन्दाय तर्जनीभ्यां स्वाहा।
गोपीजनाय मध्यमाभ्यां वषट्।
वल्लभाय अनामिकाभ्यां हुं।
स्वाहा अस्त्राय कनिष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादि न्यासः

क्लीं कृष्णाय हृदयाय नमः।
गोविन्दाय शिरसे स्वाहा।
गोपीजन शिखायै वषट्।
वल्लभाय कवचाय हुं।
स्वाहा अस्त्राय फट्। इति दिग्बन्धः।।

सर्वन्यास पश्चात

'ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्' इति दिग्बन्धः ।।

प्राणायामः

कामबीज सहित अष्टादशाक्षर श्रीगोपालमन्त्रेण प्राणायामः

अनन्तर पञ्चमुद्रा- वेणु, वनमाला, श्रीवत्स, कौस्तुभ एवं बिल्व यह पंच मनोरमा मुद्रा श्रीजी को दिखानी चाहिए। यह श्रीकृष्णानन्ददायक हैं।

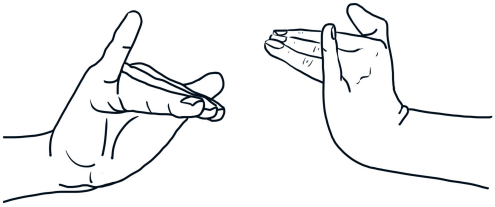

वेणुः

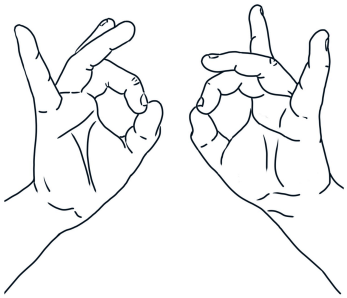

वनमाला

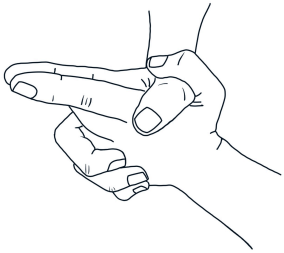

श्रीवत्सः

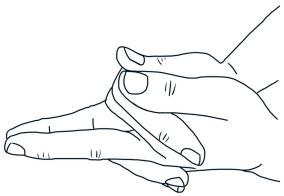

कौस्तुभः

बिल्वः

तदनन्तर पूर्वोक्त रीति से स्व-इष्ट स्वरूप का ध्यान करके अष्टादशाक्षर श्रीगोपालमन्त्रराज का यथा-संख्या जप करें।

जप समर्पण

निम्न श्लोक पढ़कर भगवान श्रीकृष्ण को जप समर्पण करें-

गुह्याति गुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् त्वयि स्थिते।।

अनेन श्रीगोपालमन्त्रराज जपकर्मणा भगवान् श्रीकृष्णः प्रीयन्तां न मम।
सर्वं श्रीकृष्णार्पणमस्तु! श्रीगोविन्दार्पणमस्तु! श्रीगोपीजनवल्लभार्पणमस्तु।।

जप समाप्ति के बाद आसान के नीचे किञ्चित जल गिराकर उससे मस्तक में तिलक करें, फिर आसन से उठें !

महामन्त्र जप विधानं

इस द्वात्रिंशताक्षर (32 अक्षरीय) मन्त्र का अधिक से अधिक जप करें-

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

भगवान श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु जी शिक्षाष्टकं के दूसरे श्लोक में आज्ञा करते हैं- 'नियमित स्मरणे न कालः' अर्थात हरिनाम जप में नियम, काल, स्थिति आदि का कोई भी बंधन नही है। नामजप सदा सर्वदा हर स्थिति में किया जा सकता है, तथापि श्रीगुरुदेव की आज्ञानुसार हरिनाम की एक निर्धारित संख्या का जप अवश्य करना चाहिये।

श्रीनारायण कवच

नारायण कवच को श्रीमद्भागवत में 'वैष्णवी विद्या' कहा गया है। यह अमोघ और श्रेष्ठतम कवच है। अतः हमारी परम्परा में इसके पाठ का अत्यधिक महत्व है। गौड़ीय सम्प्रदाय में रागानुगीय भक्ति के परिवेश में श्रीकृष्ण से किसी भी प्रकार की रक्षा-याचना करने का भाव नहीं है, अतः नारायण कवच का पाठ भी भक्ति के अंग के रूप में श्रीकृष्ण मुखोल्लासार्थ ही किया जाता है।

यहाँ कवच के पूर्व न्याय विधि बताई जा रही है। जिनको न्याय सहित पाठ करने की गुरु-आज्ञा प्राप्त हुई है वही प्रयोग करें। अन्य सभी वैष्णव और मातायें विशेषतः मूल कवच का ही पाठ करें।

श्रीनारायणकवचस्य न्यास विधिः

अङ्गन्यासः

ॐ ॐ नमः पादयोः। (दाहिने हाथ की तर्जनी और अंगुठा इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों का स्पर्श करें)

ॐ नं नमः जानुनोः। (दाहिने हाथ की तर्जनी और अंगुठा इन दोनों को मिलाकर दोनों घुटनों का स्पर्श करें)

ॐ मों नमः ऊर्वोः। (दाहिने हाथ की तर्जनी और अंगुठा इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों की जाँघो का स्पर्श करें)

ॐ नां नमः उदरे। (दाहिने हाथ की तर्जनी और अंगुठा इन दोनों को मिलाकर पेट का स्पर्श करें)

ॐ रां नमः हृदि। (मध्यमा, अनामिका और तर्जनी से हृदय का स्पर्श करें)

ॐ यं नमः उरसि। (मध्यमा, अनामिका और तर्जनी से छाती का स्पर्श करें)

ॐ णां नमः मुखे। (तर्जनी और अँगुठे के संयोग से मुख का स्पर्श करें)

ॐ यं नमः शिरसि॥ (तर्जनी और मध्यमा के संयोग से सिर का स्पर्श करें)

करन्यासः

ॐ ॐ नमः दक्षिणतर्जन्याम्।

(दाहिने अँगुठे से दाहिने तर्जनी के सिरे का स्पर्श करें)

ॐ नं नमः दक्षिणमध्यमायाम्।

(दहिने अँगुठे से दाहिने हाथ की मध्यमा अँगुली का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)

ॐ मों नमः दक्षिणानामिकायाम्।

(दहिने अँगुठे से दाहिने हाथ की अनामिका के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)

ॐ भं नमः दक्षिणकनिष्ठिकायाम्।

(दाहिने अँगुठे से हाथ की कनिष्ठिका के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)

ॐ गं नमः वामकनिष्ठिकायाम्।

(बाँये अँगुठे से बाँये हाथ की कनिष्ठिका के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)

ॐ वं नमः वामानामिकायाम्।

(बाँये अँगुठे से बाँये हाँथ की अनामिका के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)

ॐ तें नमः वाममध्यमायाम्।

(बाँये अँगुठे से बाये हाथ की मध्यमा के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)

ॐ वां नमः वामतर्जन्याम्।

(बाँये अँगुठे से बाँये हाथ की तर्जनी के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)

ॐ सुं नमः दक्षिणांगुष्ठोर्ध्वपर्वणि।

(दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से दाहिने हाथ के अँगुठे का ऊपर वाला पोर छुए)

ॐ दें नमः दक्षिणांगुष्ठाधः पर्वणि।

(दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से दाहिने हाथ के अँगुठे का नीचे वाला पोर छुए)

ॐ वां नमः वामांगुष्ठोर्ध्वपर्वणि।

(बाँये हाथ की चारों अँगुलियों से बाँये अँगुठे के ऊपरवाला पोर छुए)

ॐ यं नमः वामांगुष्ठाधः पर्वणि।।

(बाँये हाथ की चारों अँगुलियों से बाँये हाथ के अँगुठे का नीचे वाला पोर छुए)

विष्णुषडक्षरन्यासः

ॐ ॐ नमः हृदये।

(तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका से हृदय का स्पर्श करें)

ॐ विं नमः मूर्धनि।

(तर्जनी मध्यमा के संयोग सिर का स्पर्श करें)

ॐ षं नमः भ्रुवोर्मध्ये।

(तर्जनी, मध्यमा से दोनों भौंहों का स्पर्श करें)

ॐ णं नमः शिखायाम्।

(अँगुठे से सिखा का स्पर्श करें)

ॐ वें नमः नेत्रयोः।

(तर्जनी, मध्यमा से दोनों नेत्रों का स्पर्श करें)

ॐ नं नमः सर्वसन्धिषु।

(तर्जनी, मध्यमा और अनामिका से शरीर के सभी जोड़ों। जैसे – कंधा, घुटना, कोहनी आदि को स्पर्श करें)

ॐ मः अस्त्राय फट् प्राच्याम्। (पूर्व की ओर चुटकी बजाएँ)

ॐ मः अस्त्राय फट् आग्नेयाम्। (अग्निकोण में चुटकी बजायें)

ॐ मः अस्त्राय फट् दक्षिणस्याम्। (दक्षिण की ओर चुटकी बजाएँ)

ॐ मः अस्त्राय फट् नैऋत्ये। (नैऋत्य कोण में चुटकी बजाएँ)

ॐ मः अस्त्राय फट् प्रतीच्याम्। (पश्चिम की ओर चुटकी बजाएँ)

ॐ मः अस्त्राय फट् वायव्ये। (वायुकोण में चुटकी बजाएँ)

ॐ मः अस्त्राय फट् उदीच्याम्। (उत्तर की ओर चुटकी बजाएँ)

ॐ मः अस्त्राय फट् ऐशान्याम्। (ईशानकोण में चुटकी बजाएँ)

ॐ मः अस्त्राय फट् ऊर्ध्वायाम्। (ऊपर की ओर चुटकी बजाएँ)

ॐ मः अस्त्राय फट् अधरायाम्।। (नीचे की ओर चुटकी बजाएँ)

अथ श्रीनारायणकवचम्

आत्मानं परमं ध्यायेत् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम् ।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत् ॥ ११॥

(मूल कवच प्रारम्भ)

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे ।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप-पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ॥ १२॥

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति- र्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात् ।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः ॥ १३॥

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः ।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ॥ १४॥

रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः ।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान् ॥ १५॥

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा- न्नारायणः पातु नरश्च हासात् ।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः पायाद्गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात् ॥ १६॥

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा- द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात् ।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ॥ १७॥

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद् द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा ।
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद् बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥ १८॥

द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात् ।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरुकृतावतारः ॥ १९॥

मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः ।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्ति- र्मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥ २०॥

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामावतु माधवो माम् ।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥ २१॥

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः ।
दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥ २२॥

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम् ।
दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः ॥ २३॥

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्य जितप्रियासि ।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो- भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन् ॥ २४॥

त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृ- पिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन् ।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ॥ २५॥

त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य- मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि ।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम् ॥ २६॥

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत्केतुभ्यो नृभ्य एव च ।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव च ॥ २७॥

सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात् ।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयःप्रतीपकाः ॥ २८॥

गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः ।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः ॥ २९ ॥

सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः ।
बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः ॥ ३०॥

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् ।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः ॥ ३१॥

यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम् ।
भूषणायुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया ॥ ३२॥

तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः ।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ॥ ३३॥

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्ता- दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः ।
प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः ॥ ३४॥

स्वस्ति श्रीमद्भागवतान्तर्गत श्रीनारायण कवचं श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।।

श्रीमद्भागवत मंगलाचरण

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्
तेने ब्रह्म हृदाय आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।
तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि।।

धर्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमो निर्मत्सराणां सतां
वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदं तासपत्रयोन्मूलनम्।
श्रीमद्भागवते महामुनिकृते किं वा परैरीश्वरः
सद्यो हृद्यवरुध्यतेऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिस्तत्क्षणात्।।

निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रव सयुंतम् ।
पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ।।

नाम संकीर्तनं यस्य सर्वपाप प्रणाशनं।
प्रणामो दुःख शमनस्तं नमामि हरिं परं।।

चतुः श्लोकी श्रीमद्भागवतं

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत् परम्।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥
ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः ॥
यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्॥
एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा॥

एक श्लोकीय श्रीशुक रामायणम्

गुर्वर्थे त्यक्तराज्यो व्यचरदनुवनं पद्मपद्भ्यां प्रियायाः
पाणिस्पर्शाक्षमाभ्यां मृजितपथरुजो यो हरीन्द्रानुजाभ्याम्।
वैरूप्याच्छूर्पणख्याः प्रियविरहरुषा रोपिता-भ्रू-विजृम्भ
त्रस्ताब्धिर्बद्धसेतुः खलदवदहनः कोसलेन्द्रोऽवतान्नः॥

अथ विज्ञप्ति प्रकरण

श्रीकृष्ण प्रणामः

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे।
तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः।।

नमो नलिननेत्राय वेणुवाद्यविनोदिने।
राधाधरसुधापानशालिने वनमालिने।।

हे कृष्ण! करुणासिन्धो! दीनबन्धो! जगत्पते!
गोपेश! गोपिकाकान्त! राधाकान्त! नमोऽस्तुते।।

श्रीराधा-प्रणामः

रासोत्सव विलासिन्यै नमस्ते परमेश्वरी।
कृष्णप्राणाधिके राधे परमानंद विग्रहे।।

प्रणमामि महानृत्यमयीं त्वामतिसुन्दरीम्।
रत्नालंकृत शोभाढ्यां कुसुमार्चित विग्रहाम्।।

तवैवास्मि तवैवास्मि न जीवामि त्वया विना।
इति विज्ञाय देवि त्वं नय मां चरणान्तिकम् । ।

तप्तकाञ्चनगौराङ्गि ! राधे ! वृन्दावनेश्वरि !
वृषभानुसुते ! देवि ! प्रणमामि हरिप्रिये।।

ललितादीनां सखी प्रणामः

कारुण्यकल्पलतिके ललिते! नमस्ते
राधासमान गुणचातुरिके विशाखे! ।
त्वां नौमि चम्पकलतेऽच्युत चित्तचञ्च-
रीके विचित्रचरिते च सुचित्ररेखे।।

श्रीरङ्गदेवि ! दयित-प्रणयाङ्ग रंगे
तुभ्यं नमोऽस्तु सुखलास्यसरित् सुदेवि!।
विद्याविनोद सदनेऽपि च तुङ्गविद्ये
पूर्णेन्दुखण्डनखरे सुमुखीन्दुलेखे।।

राधानुजे मम नमोऽस्तु अनङ्गदेवि
तुभ्यं सदा मधुमति प्रियता-मरन्दे।
सौहार्द्य सख्यविमले विमले नमोऽस्तु
श्रीश्यामले परमसौहृद पात्रराधे।।

हे पालिके प्रणयपालिनि ते नमोऽस्तु
श्रीमङ्गले! परममङ्गल सीमरूपे।
धन्ये! व्रजेन्द्रतनय प्रियतासुसम्पन्-
न्नौमिशचन्द्ररुचिरे ननु तारके त्वाम्।।

श्रीरूपमञ्जर्यादीनां मञ्जरी प्रणामः

ताम्बूलार्पण पादमर्द्दन पयोदानाभिसारादिभिः
वृन्दारण्यमहेश्वरीं प्रियतया यास्तोषयन्ति प्रियाः।
प्राणप्रेष्ठ सखीकुलादपि किलासंकोचिता भूमिकाः
केलिभूमिषु रूपमञ्जरीमुखास्ता दासिका संश्रये।।

श्रीरूपमञ्जरि सुमञ्जुलकञ्जनेत्रे !
कारुण्यपात्रि गुणमञ्जरि मञ्जुलाली !
कस्तूरिके ! तुलसीके ! रसमञ्जरीति
वक्ष्ये कदा व्रजवनस्य वसन् निकुञ्जे ।।

श्रीगुरुरूप सखी प्रणामः

राधासम्मुख संसक्तां सखीसंग निवासिनीम्।
तामहं सततं वन्दे परां गुरुरूपा सखीम्।।

तुलसी प्रणामः

महाप्रसादजननी सर्वसौभाग्यवर्धिनी।
आधिव्याधिहरी नित्यं तुलसि त्वं नमोस्तुते।।

वृन्दायै तुलसी देव्यायै प्रियायै केशवस्यच।
कृष्ण भक्ती प्रदे देवी सत्य वत्यै नमो नमः।।

श्रीपञ्चतत्त्व-प्रणामः

पञ्चतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम्।
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम्।।

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभुनित्यानन्द।
श्री अद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द।।

श्रीगौर प्रणामः

आनन्दलीलामय विग्रहाय हेमाभदिव्यच्छविसुन्दराय।
तस्मै महाप्रेमरसप्रदाय चैतन्यचन्द्राय नमो नमस्ते।।

अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ
समर्पयितुमुन्नतोज्ज्वलरसां स्वभक्तिश्रियम्।
हरिः पुरटसुन्दरद्युतिकदम्ब सन्दीपितः
सदा हृदयकन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः।।

श्रीगौर-नित्यानन्द प्रणामः

आजानुलम्बित भुजौ कनकावदातौ संकीर्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्मपालौ वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ।।

श्रीराम प्रणामः

ॐ नमः परमहंसास्वादित चरणकमल चिन्मकरन्दाय।
भक्तजन मानस निवासाय श्रीरामचन्द्राय।।

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।

श्रीनृसिंह प्रणामः

वागीशा यस्य वदने लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि।
यस्यास्ते हृदये संवित् तं नृसिंहमहं भजे।।

श्रीनृसिंह! जय नृसिंह! जय जय नृसिंह!
प्रह्लादेश! जय पद्मा मुखपद्म भृङ्ग।।

दशावतार प्रणामः

वेदानुद्धरते जगन्तिवहते भूगोलमुद् विभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्तं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान् मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥

सर्वायुध प्रणामः

सुदर्शनमहाज्वाल कोटिसूर्यसमप्रभ।
अज्ञानान्धस्य मे नित्यं विष्णोः मार्गं प्रदर्शय।।

पाञ्चजन्य निजध्वान ध्वस्तपातकसंचय।
त्राहि मां पापिनं घोरं संसारार्णवपातिनं।।

दैत्यशोणित दिग्धानां कौमोदिकगदे हरे।
भिंधि भिंधि तमोतस्थं त्वं नमामि पुनः पुनः।।

संसार भयभीतानां योगिनां अभयप्रद।
पद्म हस्तस्थितं विष्णोः पाहि मां सर्वतोभयात्।।

वेणु प्रणामः

गोप्यः किमाचरदयं कुशलं स्म वेणुः
दामोदराधरसुधामपि गोपिकानाम्
भुङ्क्ते स्वयं यदवशिष्टरसं ह्रदिन्यो
ह्रष्यत्त्व चोऽश्रु मुमुचुस्तरवो यथार्यः ॥

श्रीगोवर्धन प्रणामः

गोवर्धनो जयति शैलकुलाधिराजो यो गोपिकाभिरुदितो हरिदासवर्यः।
कृष्णेन शक्रमखभङ्ग कृतार्चितो यः सप्ताहमस्य करपद्मतलेऽपप्य वात्सीत् ।।

श्रीयमुना प्रणामः

गंगादि-तीर्थ-परिषेवित-पादपद्मां
गोलोक-सौख्यरस-पूरमहिं महिम्ना।
आप्लाविताखिल सुधासु जलां सुखाब्धौ
राधामुकुन्द मुदितां यमुनां नमामि।।

श्रीवृन्दावन प्रणामः

राधाकरावचित पल्लव वल्लरीके !
राधापदांकविलसन् मधुरस्थलीके !
राधायशो मुखरमत्त खगावलीके !
राधाविहारविपिने रमतां मनो मे !!

श्रीवृन्दावन कैंकर्य प्राप्ति हेतु मन्त्र-

हा नाथ! रमण! प्रेष्ठ! क्वासि क्वासि महाभुज।
दास्यास्ते कृपणा यामे सखे दर्शय सन्निधिं।।

भगवत्पार्षद प्रणामः

यदृच्छया लब्धमऽपि विष्णोर्दाशरथेस्तु यः।
नैच्छन्मोक्षं विना दास्यं तस्मै हनुमते नमः।।

यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिं।
भाष्पवारि परिपूर्ण लोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकं।।

नमः पन्नगनद्धाय वैकुण्ठ वशवर्तिने।
श्रुति सिन्धु सुधोत्पाद मन्दराय गरुत्मते।।

श्रीगोपीश्वर शिव प्रणामः

वृन्दावनावनिपते! जय सोम! सोममौले।
सनक सनन्दन सनातन नारदेड्य।
गोपीश्वर! व्रजविलासि-युगांघ्रि-पद्मे
प्रेम प्रयच्छ निरुपाधि नमो नमस्ते ।।

महाभागवत प्रणामः

प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक व्यासाम्बरीष शुक-शौनक-भीष्म-दाल्भ्यान्।
रुक्माङ्गदार्जुन-वशिष्ठ-विभीषणादीन् पुण्यानिमान् परम-भागवतान् नमामि।।

आचार्य विज्ञप्तिः

श्रीपाद गोपालभट्ट गोस्वामी प्रणामः

श्रीमद्गौरपदारविन्दमधुप! श्रीभट्टगोपाल हे!
मायावादतमः प्रभाकर! कृपासिन्धो! द्विजेन्द्र! प्रभो!
श्रीमद् वैंकटभट्टनन्दन! महासद्भक्तिभूषाढ्य हे!
संसारामयमर्दन प्रणतहृन् मोदप्रद! त्राहि माम्।।

श्रीमद् गोपालभट्ट प्रभुवर करुणासागरो दीनबन्धो।
स्तस्य श्रीपाद पद्मं नतजनशरणं सर्वदाऽहं नमामि।।

श्रीगोपीनाथ दास गोस्वामी प्रणामः

श्रीराधारमणांघ्रिपद्मयुगल ध्यानैकतानोन्नतं
श्रीचैतन्यमहाप्रभोः भगवतः कारुण्यकादम्बकम्।
श्रीगोपालकभट्ट पादप्रथित प्राप्तप्रसादात्मकं
गोपीनाथमनाथनाथ मनिशं नित्यं वयं संस्तुमः।।

श्रीदामोदर दास गोस्वामी प्रणामः

कृपापारावारं कनककलकञ्ज द्युतिधरं
सुधाधाराधारं सुरनिकरनीराजिततरं।
गुणानामागारं गुरुवरमपारं परतरं
स्मरामि श्रीदामोदरवर पदद्वन्दमनिशं।।

श्री श्रीनिवासाचार्य प्रणामः

श्रीभट्टगोपालपदाब्जभृङ्ग श्रीभक्तिरत्नप्रदानैकदक्ष!
श्रीमच्छचीनन्दनप्रेमरूप! पाहि प्रभो! श्रीनिवास! द्विजेन्द्र!!

श्रीगुरु प्रणामः

नमस्ते गुरुदेवाय सर्वसिद्धिप्रदायिने।
सर्वमंगलरूपाय सर्वानन्दविधायिने।।

यस्य स्मरण मात्रेण कृष्णभक्तिः प्रजायते।
तमेव करुणासिन्धुं सद्गुरुं शरणं भजे।।

क्षमा प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देवं परिपूर्णं तदस्तु मे।।

यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवं प्रसीद मधुसूदन।।

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व मधुसूदन।।

प्रतिज्ञा तव गोविन्द न मे भक्तः प्रणश्यति ।
इति संस्मृत्य संस्मृत्य प्राणान् सन्धारयाम्यऽहं।।

मज्जन्मनः फलमिदं मधुकैटभारे मत्प्रार्थनीय मदनुग्रह एष एव।
त्वद् भृत्यभृत्य परिचारक भृत्यभृत्य भृत्यस्य भृत्य इति मां स्मर लोकनाथ।।

अथ स्तोत्र प्रकरण

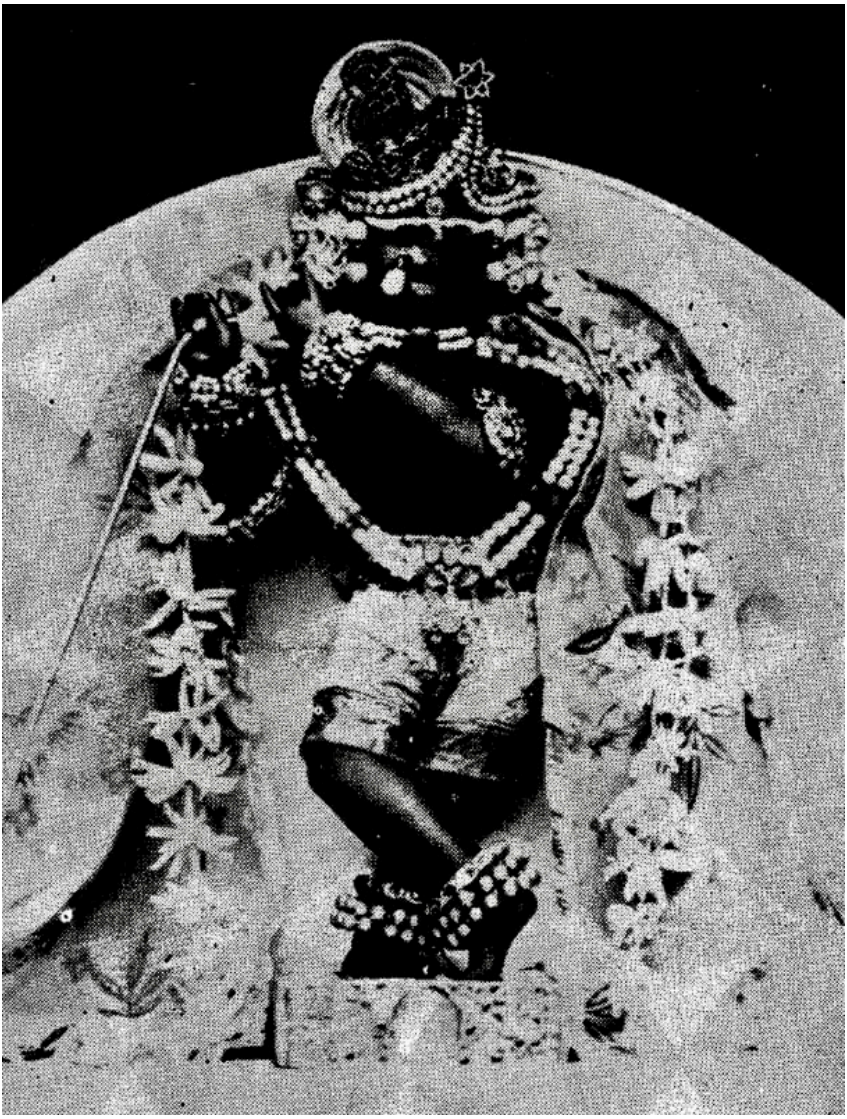

श्रीगोपाल स्तवराज स्तोत्रम्

श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ।

ॐ अस्य श्रीगोपालस्तवराजमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः ।
अनुष्टुप् छन्दः । श्रीकृष्णः परमात्मा देवता ।
श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनोयोगः ॥

अथ ध्यानम्

सजलजलदनीलं दर्शितोदारशीलं करतलधृतशैलं वेणुवाद्यै रसालम्।
व्रजजनकुलपालं कामिनीकेलिलोलं तरुणतुलसिमालं नौमि गोपालबालम्।।

श्रीनारद उवाच

नवीननीरदश्यामं नीलेन्दीवरलोचनम् ।
बल्लवीनन्दनं वन्दे कृष्णं गोपालरूपिणम् ॥ १॥

स्फुरद्बर्हिदलोद्बद्धनीलकुञ्चितमूर्धजम् ।
कदम्बकुसुमोद्बद्धवनमालाविभूषितम् ॥ २॥

गण्डमण्डलसंसर्गिचलत्कुञ्चितकुन्तलम् ।
स्थूलं मुक्ताफलोदारहारोद्योतितवक्षसम् ॥ ३॥

हेमाङ्गदतुलाकोटिकिरीटोज्ज्वलविग्रहम् ।
मन्दमारुतसंक्षोभचलिताम्बरसञ्चयम् ॥ ४॥

रुचिरौष्ठपुटन्यस्तवंशीमधुरनिःस्वनैः ।
लसद्गोपालिकाचेतो मोहयन्तं पुनः पुनः ॥ ५॥

बल्लवीवदनाम्भोजमधुपानमधुव्रतम् ।
क्षोभयन्तं मनस्तासां सस्मेरापाङ्गवीक्षणैः ॥ ६॥

यौवनोद्भिदेहाभिः संसक्ताभिः परस्परम् ।
विचित्राम्बरभूषाभिर्गोपनारीभिरावृतम् ॥ ७॥

प्रभिन्नाञ्जनकालिन्दीजलकेलिकलोत्सुकम् ।
योधयन्तं क्वचिद्गोपान् व्याहरन्तं गवां गणम् ॥ ८॥

कालिन्दीजलसंसर्गिशीतलानिलसेविते ।
कदम्बपादपच्छाये स्थितं वृन्दावने क्वचित् ॥ ९॥

रत्नभूधरसंलग्नरत्नासनपरिग्रहम् ।
कल्पपादपमध्यस्थहेममण्डपिकागतम् ॥ १०॥

वसन्तकुसुमामोदसुरभीकृतदिङ्मुखे ।
गोवर्धनगिरौ रम्ये स्थितं रासरसोत्सुकम् ॥ ११॥

सव्यहस्ततलन्यस्तगिरिवर्यातपत्रकम् ।
खण्डिताखण्डलोन्मुक्तमुक्तासारघनाघनम् ॥ १२॥

वेणुवाद्यमहोल्लासकृतहुङ्कारनिःस्वनैः ।
सवत्सैरुन्मुखैः शश्वद्गोकुलैरभिवीक्षितम् ॥ १३॥

कृष्णमेवानुगायद्भिस्तच्चेष्टावशवर्तिभिः ।
दण्डपाशोद्यतकरैर्गोपालैरुपशोभितम् ॥ १४॥

नारदाद्यैर्मुनिश्रेष्ठैर्वेदवेदाङ्गपारगैः ।
प्रीतिसुस्निग्धया वाचा स्तूयमानं परात्परम् ॥ १५॥

य एवं चिन्तयेद्देवं भक्त्या संस्तौति मानवः ।
त्रिसन्ध्यं तस्य तुष्टोऽसौ ददाति वरमीप्सितम् ॥ १६॥

राजवल्लभतामेति भवेत्सर्वजनप्रियः ।
अचलां श्रियमाप्नोति स वाग्मी जायते ध्रुवम् ॥ १७॥

॥ स्वस्ति श्रीनारदपञ्चरात्रे ज्ञानामृतसारे चतुर्थरात्रे गोपालस्तवराजः सम्पूर्णः ॥

श्रीमज्जीव गोस्वामी कृत श्रीगोपालाष्टकम्

|| श्री श्रीगोपालाय नमः ।।

नव नीरद नीलिम चौर तनुं । परिचारक वाञ्छित कल्पतरुम् ।।
चतुरानन सेवित पादयुगम् । प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतं । ।१ । ।

शिशु गोपगणावृत वेणुकरं । धृत शंख रथांग गदाकमलम् ।।
वृषभानुसुतोष्ठ सुधारसपम् । प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम् ।।२ ।।

वनमाल्यविभूषित दैत्यरिपुम् । परिबद्धसुपिच्छ विचित्रशिखम् ।।
मणिकुण्डलमण्डितगण्डयुगम् । प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम् ।।३।।

ब्रजगोपसुताकुचकुम्भशमं । यमुनाजलकुन्तलहर्षहृदम् ।।
सरसीरुहलोचन चन्द्रमुखम् । प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम् ।।४।।

मधुसूदन माधव विश्वगतिम् । गजराजविराजित मन्दगतिम् ।।
तनुमध्य सुशोभित पीतपटं । प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम् ।।५।।

गरुडध्वजमच्युतमब्धिलयं । करुणानिधि धार्मिक सर्वधरं ।।
परमेश्वर कारण तत्त्वविदं । प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम् ।।६।।

नव कार्मुकतारण यज्ञभुजम् । जनमोहनमादिमनन्तगुणम् ।।
मुरलीधर यादव लोकगुरुम् । प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम् ।।७।।

धरणीधर केशव पुण्यमयं । जगदीश जनार्दन देववरं ।।
पुरुषोत्तम वामन दुष्टहरं । प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम् । । ८ ।।

स्वस्ति श्रीमज्जीवगोस्वामी कृत श्रीगोपालाष्टकम् ।

श्रीरूपगोस्वामी कृत श्रीकृष्ण विज्ञप्तिः

कृष्ण देव ! भवन्तं वन्दे !
मन्मानस-मधुकरमर्पय निज-पद-पंकज-मकरन्दे ।।ध्रु.।।
यद्यपि समाधिषु विधिरपि पश्यति, न तव नखाग्रमरीचिम्।
इदमिच्छामि निशम्य तवाच्युत !, तदपि कृपाद्भुतवीचिम्।।
भक्तिरुदञ्चति यद्यपि माधव!, न त्वयि मम तिलमात्री।
परमेश्वरता तदपि तवाधिक, दुर्घटघटन-विधात्री।।
अयमविलोलतयाद्य सनातन, कलिताद्भुत-रसभारम्।
निवसतु नित्यमिहामृतनिन्दिनि, विन्दन् मधुरिमसारम्।।

श्रीगोपालभट्टगोस्वामी कृत श्रीकृष्ण विज्ञप्तिः

भाण्डीरेश ! शिखण्डमन्डनवर ! श्रीखण्डलिप्ताङ्ग ! हे !
वृन्दारण्यपुरन्दर ! स्फुरदमन्देन्दीवरश्यामल !
कालिन्दीप्रिय ! नन्दनन्दन ! परानन्दारविन्देक्षण !
श्रीगोविन्द ! मुकुन्द ! सुन्दरतनो ! मां दीनमानन्दय।।

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु मुख निःसृत

श्रीराधिका अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

श्रीमद्राधा रसमयी रसज्ञा रसिका तथा।
रासेश्वरी रसभुक्ति रसपूर्णा रसप्रदा।।

रङ्गिनी रसलुब्धा च रासमण्डल कारिणी।
रासविलासिनी राधा राधिका रसपूर्णदा।।

नाना रत्ना रत्नमयी रत्नमाला सुशोभना।
रक्तोष्ठी रक्तनयनी रक्तोत्पल विधारिणी।।

रमणी रामिणी गोपी वृन्दावन विलासिनी।
नानारत्न विचित्राङ्गी नाना सुखमयी सदा।।

संसारपारा तरुणी वेणुगीत विनोदिनी।
कृष्णप्रिया कृष्णमयी कृष्ण ध्यान परायणी।।

कृष्णानन्दा क्षीणमध्या कृष्णा कृष्णालया शुभा।
चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रा च कृष्णवल्लभा।।

वृन्दावनेश्वरी राधा कृष्ण अङ्गपरायणी।
ध्यानातीता ध्यानगम्या सदा कृष्ण कुतूहली।।

प्रेममयी प्रेमरूपा प्रेमा प्रेमविनोदिनी।
कृष्णप्रेम सदा साध्वी गोपीमण्डल वासिनी।।

सुन्दराङ्गी सुवर्णाभा नीलवस्त्र विधारिणी।
कृष्णानुरागी चैव कृष्णप्रेम सुलक्षणा।।

निगूढ़ रससाराङ्गी मृगाक्षी मृगलोचना।
अशेष गुणपारा च कृष्णप्राणेश्वरी रमा।।

रासमण्डल मध्यस्था कृष्णरङ्गी सदा शुचिः।
व्रजेश्वरी व्रजरूपा व्रजभूमि सुखप्रदा।।

रासोल्लास मदोन्मत्ता ललिता रससुन्दरी।
सर्व गोपीमयी नित्या नानाशास्त्र विशारदा।।

कामेश्वरी कामरूपा सदा कृष्ण परायणा।
पराशक्ति स्वरूपा च सृष्टिस्थिति विलासिनी।।

सौम्या सौम्यमयी राधा राधिका सर्वकामदा।
गङ्गा च तुलसी चैव यमुना च सरस्वती।।

भगवती भागीरथी भगवच्चित्त स्वरूपिणी।
प्रेमभक्ति सदासाध्वी प्रेमानन्द विलासिनी।।

सदानन्दमयी नित्या सत्यधर्म परायणा।
त्रैलोक्याकर्षिणी आद्या सुन्दरी कृष्णरूपिणी।।

शतमष्टोत्तरं नाम यः पठेत् प्रेमदः शुचि।
प्रातःकाल च मध्याह्ने सन्ध्यायां अर्द्धरात्रिके।।
यत्र तत्र भवेत्तुष्टं कृष्णप्रेम युतोभवेत्।।

स्वस्ति श्रीमत्कृष्णचैतन्य महाप्रभु विरचितं
श्रीराधिकाया: अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णं।

श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराजः

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि
प्रसन्नवक्त्रपङ्कजे निकुञ्जभूविलासिनि ।
व्रजेन्द्रभानुनन्दनि व्रजेन्द्रसूनुसङ्गते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १॥

अशोकवृक्षवल्लरीवितानमण्डपस्थिते
प्रवालबालपल्लवप्रभारुणाङ्घ्रिकोमले ।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ २॥

अनङ्गरङ्गमङ्गलप्रसङ्गभङ्गुरभ्रुवां
सविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्तबाणपातनैः ।
निरन्तरं वशीकृतप्रतीतिनन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ३॥

तडित्सुवर्णचम्पकप्रदीप्तगौरविग्रहे
मुखप्रभापरास्तकोटिशारदेन्दुमण्डले ।
विचित्रचित्रसञ्चरच्चकोरशाबलोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥ ४॥

मदोन्मदातियौवने प्रमोदमानमण्डिते
प्रियानुरागरञ्जिते कलाविलासपण्डिते ।
अनन्यधन्यकुञ्जराज्यकामकेलिकोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ५॥

अशेषहावभावधीरहीरहारभूषिते
प्रभूतशातकुम्भकुम्भकुम्भकुम्भसुस्तनि ।
प्रशस्तमन्दहास्यचूर्णपूर्णसौख्यसागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ६॥

मृणालवालवल्लरी तरङ्गरङ्गदोर्लते
लताग्रलास्यलोलनीललोचनावलोकने ।
ललल्लुलन्मलन्मनोज्ञमुग्धमोहनाश्रिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ७॥

सुवर्णमालिकाञ्चितत्रिरेखकम्बुकण्ठगे
त्रिसूत्रमङ्गलीगुणत्रिरत्नदीप्तिदीधिते ।
सलोलनीलकुन्तलप्रसूनगुच्छगुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ८॥

नितम्बबिम्बलम्बमानपुष्पमेखलागुणे
प्रशस्तरत्नकिङ्किणीकलापमध्यमञ्जुले ।
करीन्द्रशुण्डदण्डकावराहसौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ९॥

अनेकमन्त्रनादमञ्जुनूपुरारवस्खल-
त्समाजराजहंसवंशनिक्वणातिगौरवे ।
विलोलहेमवल्लरीविडम्बचारुचङ्क्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १०॥

अनन्तकोटिविष्णुलोकनम्रपद्मजार्चिते
हिमाद्रिजापुलोमजाविरिञ्चजावरप्रदे ।
अपारसिद्धिऋद्धिदिग्धसम्पदङ्गुलीनखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ११॥

मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेदभारतीश्वरि प्रमाणशासनेश्वरि ।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोदकाननेश्वरि
व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते ॥ १२॥

इतीदमतभुतस्तवं निशम्य भानुनन्दनी
करोतु सन्ततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम् ।
भवेत्तदैव सञ्चितत्रिरूपकर्मनाशनं
भवेत्तदा व्रजेन्द्रसूनुमण्डलप्रवेशनम् ॥ १३॥

फलश्रुतिः -

राकायाञ्च सिताष्टम्यां दश्म्याञ्च विशुद्धधीः ।
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्सशिवः स्वयम् ॥ १४॥

यं यं कामयते कामं तन्तमाप्नोति साधकः ।
राधाकृपाकटाक्षेण भुक्त्वान्ते मोक्षमाप्नुयात् ॥ १५॥

ऊरुदघ्ने नाभिदघ्ने हृदघ्ने कण्ठदघ्नके ।
राधाकुण्डजले स्थित्वा यः पठेत्साधकस्तु सः ॥ १६॥

तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्वाक्सिद्धिञ्च तथा लभेत् ।
ऐश्वर्यञ्च लभेत्साक्षाद्दृशा पश्यन्ति राधिकाम् ॥ १७॥

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम् ।
येन पश्यन्ति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्यामसुन्दरम् ॥ १८॥

नित्यलीलाप्रवेश्यञ्च ददाति श्रीव्रजाधिपः ।
अतः परतरं प्राप्त्यै वैष्णवस्य न विद्यते ॥ १९॥

स्वस्तिश्री ऊर्ध्वमान्यतन्त्रान्तर्गतः श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराजः सम्पूर्णः।।

भगवद् दासत्व प्राप्ति हेतु

वृत्रकृता श्रीविष्णुस्तुतिः

अहं हरे तव पादैकमूलदासानुदासो भवितास्मि भूयः ।
मनः स्मरेतासुपतेर्गुणांस्ते गृणीत वाक्कर्म करोतु कायः ॥ १॥

न नाकपृष्ठं न च पारमेष्ठ्यं न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम् ।
न योगसिद्धीरपुनर्भवं वा समञ्जस त्वा विरहय्य काङ्क्षे ॥ २॥

अजातपक्षा इव मातरं खगाः स्तन्यं यथा वत्सतराः क्षुधार्ताः ।
प्रियं प्रियेव व्युषितं विषण्णा मनोऽरविन्दाक्ष दिदृक्षते त्वाम् ॥ ३॥

ममोत्तमश्लोकजनेषु सख्यं संसारचक्रे भ्रमतः स्वकर्मभिः ।
त्वन्माययात्माऽऽत्मजदारगेहेष्वासक्तचित्तस्य न नाथ भूयात् ॥ ४॥

स्वस्तिश्रीमद्भागवतान्तर्गता वृत्रकृता श्रीविष्णुस्तुतिः समाप्ता ।

राधा दासत्व प्राप्ति हेतु

श्रीराधा कैंकर्य प्रार्थना चतुःश्लोकी

कृपयति यदि राधा बाधिताशेषबाधा
किमपरवशिष्टं पुष्टिमर्यादयोर्मे।
यदि वदति च किञ्चित् स्मेरहासोदित श्री-
द्विजवरमणिपंक्त्या मुक्तिशुक्त्या तदा किम्।। १ ।।

श्यामसुन्दर शिखण्डशेखर स्मेरहास मुरलीमनोहर।
राधिकारसिक मां कृपानिधे स्वप्रियाचरणकिंकरीं कुरु।। २ ।।

प्राणनाथवृषभानुनन्दिनी - श्रीमुखाब्ज - रसलोलषट्पद।
राधिकापदतले कृतस्थितिं त्वां भजामि रसिकेन्द्रशेखर।। ३ ।।

संविधाय दशने तृणं विभो प्रार्थये व्रजमहेन्द्रनन्दन।
अस्तु मोहन तवातिवल्लभा जन्मजन्मनि मदीश्वरी प्रिया।। ४ ।।

स्वस्ति श्रीमद्विट्ठलेश्वराचार्य विरिचितं राधा कैंकर्य प्रार्थना चतुःश्लोकी सम्पूर्णं ।

श्रीयमुनाष्टकम्

भ्रातुरन्तकस्य पत्तनेऽभिपत्तिहारिणी प्रेक्षयातिपापिनोऽपि पापसिन्धुतारिणी।
नीरमाधुरीभिरप्यशेषचित्तबन्धिनी मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।। १।।

हारिवारिधारयाभिमण्डितोरुखाण्डवा पुण्डरीकमण्डलोद्यदण्डजालिताण्डवा।
स्नानकामपामरोग्रपापसम्पदन्धिनी मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।। २ ।।

शीकराभिमृष्टजन्तुदुर्विपाकमर्दिनी नन्दनन्दनान्तरङ्गभक्तिपूरवर्धिनी।
तीरसङ्गमाभिलाषिमङ्गलानुबन्धिनी मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।। ३।।

द्वीपचक्रवालजुष्टसप्तसिन्धुभेदिनी श्रीमुकुन्दनिर्मितोरुदिव्यकेलिवेदिनी।
कान्तिकन्दलीभिरिन्द्रनीलवृन्दनिन्दिनी मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।। ४ ।।

माथुरेण मण्डलेन चारुणाभिमण्डिता प्रेमनद्धवैष्णवाध्ववर्धनाय पण्डिता।
ऊर्मिदोर्विलासपद्मनाभपादवन्दिनी मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।। ५ ।।

रम्यतीररम्भमाणगोकदम्बभूषिता दिव्यगन्धभाक्कदम्बपुष्पराजिरुषिता।
नन्दसूनुभक्तसङ्घसङ्गमाभिनन्दिनी मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।। ६ ।।

फुल्लपक्षमल्लिकाक्षहंसलक्षकूजिता भक्तिविद्धदेवसिद्धकिन्नरालिपूजिता।
तीरगन्धवाहगन्धजन्मबन्धरन्धिनी मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।। ७ ।।

चिद्विलासवारिपूरभूर्भुवःस्वरापिनी कीर्तितापि दुर्मदोरुपापमर्मतापिनी।
बल्लवेन्द्रनन्दनाङ्गरागभङ्गगन्धिनी मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।। ८ ।।

तुष्टबुद्धिरष्टकेन निर्मलोर्मिचेष्टितां त्वामनेन भानुपुत्रि! सर्वदेववेष्टिताम्।
यःस्तवीति वर्धयस्व सर्वपापमोचने भक्तिपूरमस्य देवि! पुण्डरीकलोचने।। ९ ।।

स्वस्ति श्रीरूपगोस्वामिविरचित स्तवमालायां श्रीयमुनाष्टकं सम्पूर्णम् ।

श्रीमद्भागवतान्तर्गत

श्रीभीष्म स्तुतिः

श्री भीष्म उवाच-

इति मतिरुपकल्पिता वितृष्णा भगवति सात्वत पुङ्गवे विभूम्नि ।
स्वसुखमुपगते क्वचिद्विहर्तुं प्रकृतिमुपेयुषि यद्भवप्रवाहः ॥

त्रिभुवनकमनं तमालवर्णं रविकरगौरवराम्बरं दधाने ।
वपुरलककुलावृताननाब्जं विजयसखे रतिरस्तु मेऽनवद्या ॥

युधितुरगरजोविधूम्रविष्वक्कचलुलितश्रमवार्यलंकृतास्ये ।
मम निशितशरैर्विभिद्यमानत्वचि विलसत्कवचेऽस्तु कृष्ण आत्मा ॥

सपदि सखिवचो निशाम्य मध्ये निजपरयोर्बलयो रथं निवेश्य ।
स्थितवति परसैनिकायुरक्ष्णा हृतवति पार्थ सखे रतिर्ममास्तु ॥

व्यवहित पृथनामुखं निरीक्ष्य स्वजनवधाद्विमुखस्य दोषबुद्ध्या।
कुमतिमहरदात्मविद्यया यश्चरणरतिः परमस्य तस्य मेऽस्तु ॥

स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञा मृतमधिकर्तुमवप्लुतो रथस्थः ।
धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलत्गुः हरिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीयः ॥

शितविशिखहतोविशीर्णदंशः क्षतजपरिप्लुत आततायिनो मे ।
प्रसभमभिससार मद्वधार्थं स भवतु मे भगवान् गतिर्मुकुन्दः ॥

विजयरथकुटुम्ब आततोत्रे धृतहयरश्मिनि तच्छ्रियेक्षणीये।
भगवति रतिरस्तु मे मुमूर्षोः यमिह निरीक्ष्य हताः गताः सरूपम् ॥

ललित गति विलास वल्गुहास प्रणय निरीक्षण कल्पितोरुमानाः ।
कृतमनुकृतवत्य उन्मदान्धाः प्रकृतिमगन् किल यस्य गोपवध्वः ॥

मुनिगणनृपवर्यसंकुलेऽन्तः सदसि युधिष्ठिरराजसूय एषाम् ।
अर्हणमुपपेद ईक्षणीयो मम दृशि गोचर एष आविरात्मा ॥

तमिममहमजं शरीरभाजां हृदिहृदि धिष्टितमात्मकल्पितानाम् ।
प्रतिदृशमिव नैकधाऽर्कमेकं समधिगतोऽस्मि विधूतभेदमोहः ॥

स्वस्ति श्रीमद्भागवतान्तर्गत श्रीभीष्मस्तुति संपूर्ण ।।

सत्यव्रतोक्त दमोदराष्टकं

नमामीश्वरं सच्-चिद्-आनन्द-रूपं लसत्-कुण्डलं गोकुले भ्राजमनम्
यशोदा-भियोलूखलाद् धावमानं परामृष्टम् अत्यन्ततो द्रुत्य गोप्या ॥ १॥

रुदन्तं मुहुर् नेत्र-युग्मं मृजन्तम् कराम्भोज-युग्मेन सातङ्क-नेत्रम्
मुहुः श्वास-कम्प-त्रिरेखाङ्क-कण्ठ स्थित-ग्रैवं दामोदरं भक्ति-बद्धम् ॥ २॥

इतीदृक् स्व-लीलाभिर् आनन्द-कुण्डे स्व-घोषं निमज्जन्तम् आख्यापयन्तम्
तदीयेषित-ज्ञेषु भक्तैर् जितत्वं पुनः प्रेमतस् तं शतावृत्ति वन्दे ॥ ३॥

वरं देव मोक्षं न मोक्षावधिं वा न चन्यं वृणे ‘हं वरेषाद् अपीह
इदं ते वपुर् नाथ गोपाल-बालं सदा मे मनस्य् आविरास्तां किम् अन्यैः ॥ ४॥

इदं ते मुखाम्भोजम् अत्यन्त-नीलैर् वृतं कुन्तलैः स्निग्ध-रक्तैश् च गोप्या
मुहुश् चुम्बितं बिम्ब-रक्ताधरं मे मनस्य् आविरास्ताम् अलं लक्ष-लाभैः ॥ ५॥

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो प्रसीद प्रभो दुःख-जालाब्धि-मग्नम्
कृपा-दृष्टि-वृष्ट्याति-दीनं बतानु गृहाणेष माम् अज्ञम् एध्य् अक्षि-दृश्यः ॥ ६॥

कुवेरात्मजौ बद्ध-मूर्त्यैव यद्वत् त्वया मोचितौ भक्ति-भाजौ कृतौ च
तथा प्रेम-भक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ न मोक्षे ग्रहो मे ‘स्ति दामोदरेह ॥ ७॥

नमस्ते ‘स्तु दाम्ने स्फुरद्-दीप्ति-धाम्ने त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने
नमो राधिकायै त्वदीय-प्रियायै नमो ‘नन्त-लीलाय देवाय तुभ्यम् ॥ ८॥॥

स्वस्ति श्रीसत्यव्रतकृतदामोदरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीजयदेव गोस्वामी कृत
मंगल गीतम्

श्रित-कमला-कुच-मण्डल धृत-कुण्डल ए ।
कलित-ललित-वन-माल जय जय देव हरे ।।

दिन-मणि-मण्डल-मण्डन भव-खण्डन ए ।
मुनि-जन-मानस-हंस जय जय देव हरे ।।

कालिय-विष-धर-गञ्जन जन-रञ्जन ए ।
यदुकुल-नलिन-दिनेश जय जय देव हरे ।।

मधु-मुर-नरक-विनाशन गरुडासन ए ।
सुर-कुल-केलि-निदान जय जय देव हरे ।।

अमल-कमल-दल-लोचन भव-मोचन ए ।
त्रिभुवन-भुवन-निधान जय जय देव हरे ।।

जनक-सुता-कृत-भूषण जित-दूषण ए ।
समर-शमित-दश-कण्ठ जय जय देव हरे ।।

अभिनव-जल-धर-सुन्दर धृत-मन्दर ए ।
श्री-मुख-चन्द्र-चकोर जय जय देव हरे ।।

तव चरणं प्रणता वयम् इति भावय ए ।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ।।

श्री-जयदेव-कवेर् इदं कुरुते मुदम् ए ।
मङ्गलम् उज्ज्वल-गीतं जय जय देव हरे ।।

दशावतार स्तोत्रं

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम् ।
विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ।।
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ।।१।।

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे ।
धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ।।
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ।।२।।

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना ।
शशिनि कलंकलेव निमग्ना ।।
केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ।।३।।

तव करकमलवरे नखमद्भुतश्रृंगम् ।
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृंगम् ।।
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ।।४।।

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन ।
पदनखनीरजनितजनपावन ।।
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ।।५।।

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम् ।
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ।।
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ।।६।।

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम् ।
दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् ।।
केशव धृतरघुपतिवेष जय जगदीश हरे ।।७।।

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम् ।
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ।।
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ।।८।।

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् ।
सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ।।
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ।।९।।

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् ।
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।।
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ।।१०।।

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् ।
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।।
केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ।।११।।

श्री जगन्नाथाष्टकं

कदाचित् कालिन्दी तट विपिन सङ्गीत तरलो
मुदाभीरी नारी वदन कमला स्वाद मधुपः
रमा शम्भु ब्रह्मामरपति गणेशार्चित पदो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥१॥

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचर-कटाक्षं विदधते ।
सदा श्रीमद्-वृन्दावन-वसति-लीला-परिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥२॥

महाम्भोधेस्तीरे कनक रुचिरे नील शिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज बलभद्रेण बलिना ।
सुभद्रा मध्यस्थः सकलसुर सेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥३॥

कृपा पारावारः सजल जलद श्रेणिरुचिरो
रमा वाणी रामः स्फुरद् अमल पङ्केरुहमुखः ।
सुरेन्द्रैर् आराध्यः श्रुतिगण शिखा गीत चरितो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥४॥

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित भूदेव पटलैः
स्तुति प्रादुर्भावम् प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।
दया सिन्धुर्बन्धुः सकल जगतां सिन्धु सुतया
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥५॥

परंब्रह्मापीड़ः कुवलय-दलोत्फुल्ल-नयनो
निवासी नीलाद्रौ निहित-चरणोऽनन्त-शिरसि ।
रसानन्दी राधा-सरस-वपुरालिङ्गन-सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथगामी भवतु मे ॥६॥

परंब्रह्मापीड़ः कुवलय-दलोत्फुल्ल-नयनो
निवासी नीलाद्रौ निहित-चरणोऽनन्त-शिरसि ।
रसानन्दी राधा-सरस-वपुरालिङ्गन-सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथगामी भवतु मे ॥६॥

न वै याचे राज्यं न च कनक माणिक्य विभवं
न याचेऽहं रम्यां सकल जन काम्यां वरवधूम् ।
सदा काले काले प्रमथ पतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥७॥

हर त्वं संसारं द्रुततरम् असारं सुरपते
हर त्वं पापानां वितातिम् अपरां यादवपते ।
अहो दीनेऽनाथे निहित चरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥८॥

जगन्नाथाष्टकं पुन्यं यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।
सर्वपाप विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ॥९॥

॥ स्वस्ति श्रीमत् शंकराचार्यविरचितं जगन्नाथाष्टकं संपूर्णम् ॥

श्रीशचीतनयाष्टकम्

उज्ज्वलावरणगौरवरदेहं विलसितनिरवधिभावविदेहम् ।
त्रिभुवनपावनकृपायाः लेशं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥ १॥

गद्गदान्तरभावविकारं दुर्जनतर्जननादविशालम् ।
भवभयभञ्जनकारणकरुणं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥ २॥

अरुणाम्बरधरचारुकपोलं इन्दुविनिन्दितनखचयरुचिरम् ।
जल्पितनिजगुणनामविनोदं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥ ३॥

विगलितनयनकमलजलधारं भूषणनवरसभावविकारम् ।
गतिअतिमन्थरनृत्यविलासं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥ ४॥

चञ्चलचारुचरणगतिरुचिरं मञ्जीररञ्जितपदयुगमधुरम् ।
चन्द्रविनिन्दितशीतलवदनं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥ ५॥

धृतकटिडोरकमण्डलुदण्डं दिव्यकलेवरमुण्डितमुण्डम् ।
दुर्जनकल्मषखण्डनदण्डं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥ ६॥

भूषणभूरज अलकावलितं कम्पितबिम्बाधरवररुचिरम् ।
मलयजविरचित उज्ज्वलतिलकं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥ ७॥

निन्दितारुणकमलदलनयनं आजानुलम्बितश्रीभुजयुगलम् ।
कलेवरकैशोरनर्तकवेशं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥ ८॥

स्वस्ति श्रीसार्वभौमभट्टाचार्यविरचितं शचीतनयाष्टकं सम्पूर्णम् ।

श्रीकृष्णचैतन्य द्वादशनामस्तोत्रम्

चैतन्यः कृष्णचैतन्यो गौराङ्गो द्विजनायकः ।
यतीनां दण्डिनां चैव न्यासिनां च शिरोमणिः ॥ १॥

रक्ताम्बरधरः श्रीमान् नवद्वीपसुधाकरः ।
प्रेमभक्तिप्रदश्चैव श्रीशचीनन्दनस्तथा ॥ २॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
तस्य वाञ्छासुसिद्धिः स्याद्भक्तिः श्रीलपदाम्बुजे ॥ ३॥

स्वस्ति श्रीसार्वभौमभट्टाचार्यविरचितं कृष्णचैतन्यद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्रस्यसहस्त्रनामस्तोत्रम्

नमस्तस्मै भगवते चैतन्याय महात्मने ।
कलिकल्मषनाशाय भवाब्धितारणाय च ॥ १॥

ब्रह्मणा हरिदासेन श्रीरूपाय प्रकाशितम् ।
तत्सर्वं कथयिष्यामि सावधानं निशामय ॥ २॥

श्रुत्वैवं वैष्णवाः सर्वे प्रहृष्टाः प्रेमविह्वलाः ।
सादरं परिपप्रच्छुः प्रेमगद्गदया गिरा ॥ ३॥

वैष्णवानां हि कृपया स्मृत्वा वाक्यं पितुस्तदा ।
सणोन्त्य भगवद्रूपं नामानि कथयामि वै ॥ ४॥

ॐ अस्य श्रीकृष्णचैतन्यसहस्त्रनामस्तोत्रस्य
नारायणः ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमद्भगवद्भक्तिर्देवता
श्रीराधाकृष्णप्रीतये श्रीकृष्णचैतन्य सहस्त्रनाम जपे विनियोगः ।

अथ ध्यानम्
ॐ नमः प्रेमसमुच्चयाय गोपीजनवल्लभाय महात्मने ॥

ॐ विश्वम्भरः सदानन्दो विश्वजिद्विश्वभावनः ।
महानुभावो विश्वात्मा गौराङ्गो गौरभावनः ॥ १॥

हेमप्रभो दीर्घबाहुर्दीर्घग्रीवः शुचिर्वसुः ।
चैतन्यश्चेतनश्चेतश्चित्तरूपी प्रभुः स्वयम् ॥ २॥

राधाङ्गी राधिकाभावो राधान्वेशी प्रियंवदः ।
नीतिज्ञः सर्वधर्मज्ञो भक्तिमान् पुरुषोत्तमः ॥ ३॥
अनुभावी महाधैर्यः शास्त्रज्ञो नित्यनूतनः ।
प्रभावी भगवान् कृष्णश्चैतन्यो रसविग्रहः ॥ ४॥

अनादिनिधनो धाता धरणीमन्दनः शुचिः ।
वराङ्गश्चञ्चलो दक्षः प्रतापी साधुसङ्गतः ॥ ५॥

उन्मादी उन्मदो वीरो धीरग्राणी रसप्रियः ।
रक्ताम्बरो दण्डधरः संन्यासी यतिभूषणः ॥ ६॥

दण्डी छत्री चक्रपाणिः कृपालुः सर्वदर्शनः ।
निरायुधः सर्वशास्ता कलिदोषप्रनाशनः ॥ ७॥

गुरुवर्यः कृपासिन्धुर्विक्रमी च जनार्दनः ।
म्लेच्छग्राही कुनीतिघ्नो दुष्टहारी कृपाकुलः ॥ ८॥

ब्रह्मचारी यतिवरो ब्रह्मण्यो ब्राह्मणः सुधीः ।
द्विजराजश्चक्रवर्ती कविः कृपणवत्सलः ॥ ९॥

निरीहः पावकोऽर्थज्ञो निर्धूमः पावकोपमः ।
नारवन्द्यो हराकारो भविष्णुर्नरनायकः ॥ १०॥

दानवीरो युद्धवीरो दयावीरो वृकोदरः ।
ज्ञानवीरो महावीरः शान्तिवीरः प्रतापनः ॥ ११॥

श्रीजिष्णुर्भ्रमिको जिष्णुः सहिष्णुश्चारुदर्शनः ।
नरो वरीयान् दुर्दर्शो नवद्वीपसुधाकरः ॥ १२॥

चन्द्रहास्यश्चन्द्रनखो बलिमदुदरो बली ।
सूर्यप्रभः सूर्यकांशुः सूर्याङ्गो मणिभूषणः ॥ १३॥

कम्भुकण्ठः कपोलश्रीर्निम्ननाभिः सुलोचनः ।
जगन्नाथसुतो विप्रो रत्नाङ्गो रत्नभूषणः ॥ १४॥

तीर्थार्थी तीर्थदस्तीर्थस्तीर्थाङ्गस्तीर्थसाधकः ।
तीर्थास्पदस्तीर्थवास: तीर्थसेवी निराश्रयः ॥ १५॥

तीर्थालादी तीर्थप्रदो ब्राह्मको ब्रह्मणो भ्रमी ।
श्रीवासपण्डितानन्दो रामानन्दप्रियङ्करः ॥ १६॥

गदाधरप्रियो दासो विक्रमी शङ्करप्रियः ।
योगी योगप्रदो योगो योगकारी त्रियोगकृत् ॥ १७॥

सर्वः सर्वस्वदो भूमा सर्वाङ्गः सर्वसम्भवः ।
वाणिर्बाणायुधो वादी वाचस्पतिरयोनिजः ॥ १८॥

बुद्धिः सत्यं बलं तेजो धृतिमान् जङ्गमकृतिः ।
मुरारिर्वर्धनो धाता नृहरिः मानवर्धनः ॥ १९॥

निष्कर्मा कर्मदो नाथः कर्मज्ञः कर्मनाशकः ।
अनर्घः कारकः कर्म क्रियार्हः कर्मबाधकः ॥ २०॥

निर्गुणो गुणवानीशो विधाता सामगोऽजितः ।
जितश्वासो जितप्राणो जितानङ्गो जितेन्द्रियः ॥ २१॥

कृष्णभावी कृष्णनामी कृष्णात्मा कृष्णनायकः ।
अद्वैतो द्वैतसाहित्यो द्विभावः पालको वशी ॥ २२॥

श्रीवासः श्रीधराहव्यो हलनायकसारवित् ।
विश्वरूपानुजश्चन्द्रो वरीयान् माधवोऽच्युतः ॥ २३॥

रूपासक्तः सदाचारो गुणज्ञो बहुभावकः ।
गुणहीनो गुणातीतो गुणग्राही गुणार्णवः ॥ २४॥

ब्रह्मानन्दो नित्यानन्दः प्रेमानन्दोऽतिनन्दकः ।
निन्द्यहारी निन्द्यवर्जी निन्द्यघ्नः परितोषकः ॥ २५॥

यज्ञबाहुर्विनीतात्मा नामयज्ञप्रचारकः ।
कलिवर्यः सुचिनांशुः पर्यांसुः पावकोपमः ॥ २६॥

हिरण्यगर्भः सूक्ष्मात्मा वैराज्यो विरजापतिः ।
विलासी प्रभावी स्वांशी परावस्थः शिरोमणिः ॥ २७॥

मायाघ्नो मायिको मायी मायावादी विचक्षणः ।
कृष्णाच्छादी कृष्णजल्पी विषयघ्नो निराकृतिः ॥ २८॥

सङ्कल्पशून्यो मायीशो मायाद्वेशी व्रजप्रियः ।
व्रजाधीशो व्रजपतिर्गोपगोकुलनन्दनः ॥ २९॥

व्रजवासी व्रजभावो व्रजनायकसत्तमः ।
गुप्तप्रियो गुप्तभावो वाञ्छितः सत्कुलाश्रयः ॥ ३०॥

रागानुगो रागसिन्धू रागात्मा रागवर्धनः ।
रागोद्गतः प्रेमसाक्षी भट्टनाथः सनातनः ॥ ३१॥

गोपालभट्टगः प्रीतो लोकनाथप्रियः पटुः ।
द्विभुजः षड्भुजो रूपी राजदर्पविनाशनः ॥ ३२॥

काशिमिश्रप्रियो वन्द्यो वन्दनीयः शचिप्रसूः ।
मिश्रपुरन्दराधिसो रघुनाथप्रियो रयः ॥ ३३॥

सार्वभौमदर्पहारी अमोघारिर्वसुप्रियः ।
सहजः सहजाधीशः शाश्वतः प्रणयातुरः ॥ ३४॥

किलकिञ्चिदभावार्तः पाण्डुगण्डः शुचातुरः ।
प्रलापी बहुवाक् शुद्धः ऋजुर्वक्रगतिः शिवः ॥ ३५॥

घत्तायितोऽरविन्दाक्षः प्रेमवैचित्यलक्षकः ।
प्रियाभिमानी चतुरः प्रियावर्ती प्रियोन्मुखः ॥ ३६॥

लोमाञ्चितः कम्पधरः अश्रुमुखो विशोकहा ।
हास्यप्रियो हास्यकारी हास्ययुग् हास्यनागरः ॥ ३७॥

हास्यग्रामी हास्यकरस्त्रिभङ्गी नर्तनाकुलः ।
ऊर्ध्वलोमा ऊर्ध्वहस्त ऊर्ध्वरावी विकारवान् ॥ ३८॥

भवोल्लासी धीरशान्तो धीरङ्गो धीरनायकः ।
देवास्पदो देवधामा देवदेवो मनोभवः ॥ ३९॥

हेमाद्रिर्हेमलावण्यः सुमेरुर्ब्रह्मसादनः ।
ऐरावतस्वर्णकान्तिः शरघ्नो वाञ्छितप्रदः ॥ ४०॥

करोभोरुः सुदीर्घाक्षः कम्पभ्रूचक्षुनासिकः ।
नामग्रन्थी नामसङ्ख्या भावबद्धस्तृषाहरः ॥ ४१॥

पापाकर्षी पापहारी पापघ्नः पापशोधकः ।
दर्पहा धनदोऽरिघ्नो मानहा रिपुहा मधुः ॥ ४२॥

रूपहा वेशहा दिव्यो दीनबन्धुः कृपामयः ।
सुधक्षरः सुधास्वादी सुधामा कमनीयकः ॥ ४३॥

निर्मुक्तो मुक्तिदो मुक्तो मुक्ताख्यो मुक्तिबाधकः ।
निःशङ्को निरहङ्कारो निर्वैरो विपदापहः ॥ ४४॥

विदग्धो नवलावण्यो नवद्वीपद्विज प्रभुः ।
निरङ्कुशो देववन्द्यः सुराचार्यः सुरारिहा ॥ ४५॥

सुरवर्यो निन्द्यहारी वादघ्नः परितोषकः ।
सुप्रकाशो बृहद्बाहुर्मित्रज्ञः कविभूषणः ॥ ४६॥

वरप्रदो वरपाङ्गो वरयुग् वरनायकः ।
पुष्पहासः पद्मगन्धिः पद्मरागः प्रजागरः ॥ ४७॥

ऊर्ध्वगः सत्पथाचारी प्राणद ऊर्ध्वगायकः ।
जनप्रियो जनाह्लादो जनकऋषि जनस्पृहः ॥ ४८॥

अजन्मा जन्मनिलयो जनानदो जनार्द्रधीः ।
जगन्नाथो जगद्बन्धुर्जगद्देवो जगत्पतिः ॥ ४९॥

जनकारी जनामोदो जनकानन्दसाग्रहः ।
कलिप्रियः कलिश्लाघ्यः कलिमानविवर्धनः ॥ ५०॥

कलिवर्यः सदानन्दः कलिकृत् कलिधन्यमान् ।
वर्धामनः श्रुतिधरः वर्धनो वृद्धिदायकः ॥ ५१॥
सम्पदः शारणो दक्षो घृणाङ्गी कलिरक्षकः ।
कलिधन्यः समयज्ञः कलिपुण्यप्रकाशकः ॥ ५२॥

निश्चिन्तो धीरललितो धीरवाक् प्रेयसीप्रियः ।
वामास्पर्शी वामभावो वामरूपो मनोहरः ॥ ५३॥

अतीन्द्रियः सुराध्यक्षो लोकाध्यक्षः कृतकृतः ।
युगादिकृद् युगकरो युगज्ञो युगनायकः ॥ ५४॥

युगावर्तो युगासीमः कालवान् कालशक्तिधृक् ।
प्रणयः शाश्वतो हृष्टो विश्वजिद् बुद्धिमोहनः ॥ ५५॥

सन्ध्याता ध्यानकृद् ध्यानी ध्यानमङ्गलसन्धिमान् ।
विस्रुतात्मा हृदिस्थिरो ग्रामनियप्रग्राहकः ॥ ५६॥

स्वरमूर्च्छी स्वरालापी स्वरमूर्तिविभूषणः ।
गानग्राही गानलुब्धो गायको गानवर्धनः ॥ ५७॥

गानमान्यो ह्यप्रमेयः सत्कर्ता विश्वधृक् सहः ।
क्षीराब्धिकमथाकारः प्रेमगर्भझषाकृतिः ॥ ५८॥

बीभत्सुर्भावहृदयः अदृश्यो बर्हिदर्शकः ।
ज्ञानरुद्धो धीरबुद्धिरखिलात्मप्रियः सुधीः ॥ ५९॥

अमेयः सर्वविद्भानुर्बभ्रूर्बहुशिरो रुचिः ।
उरुश्रवाः महादीर्घो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ ६०॥

श्रुतिस्मृतिधरो वेदः श्रुतिज्ञः श्रुतिबाधकः ।
हृदिस्पृश आस आत्मा श्रुतिसारो विचक्षणः ॥ ६१॥
कलापी निरनुग्राही वैद्यविद्याप्रचारकः ।
मीमांसकारिर्वेदाङ्ग वेदार्थप्रभवो गतिः ॥ ६२॥

परावरज्ञो दुष्पारो विरहाङ्गी सतां गतिः ।
असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मा सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ ६३॥

धर्मसेतुर्धर्मपरो धर्मात्मा धर्मभावनः ।
उदीर्णसंशयच्छिन्नो विभूतिः शाश्वतः स्थिरः ॥ ६४॥

शुद्धात्मा शोभनोत्कण्ठोऽनिर्देश्यः साधनप्रियः ।
ग्रन्थप्रियो ग्रन्थमयः शास्त्रयोनिर्महाशयः ॥ ६५॥

अवर्णो वर्णनिलयो नाश्रमी चतुराश्रमः ।
अविप्र विप्रकृत् स्तुत्यो राजन्यो राज्यनाशकः ॥ ६६॥

अवश्यो वश्यताधीनः श्रीभक्तिव्यवसायकः ।
मनोजवः पुरयिता भक्तिकीर्तिरनामयः ॥ ६७॥

निधिवर्जी भक्तिनिधिर्दुर्लभो दुर्गभावकृत् ।
कर्तनीः कीर्तिरतुलः अमृतो मुरजप्रियः ॥ ६८॥

शृङ्गारः पञ्चमो भावो भावयोनिरनन्तरः ।
भक्तिजित् प्रेमभोजी च नवभक्तिप्रचारकः ॥ ६९॥

त्रिगर्तस्त्रिगुणामोदस्त्रिवाञ्छी प्रीतिवर्धनः ।
नियन्ता श्रमगोऽतीतः पोषणो विगतज्वरः ॥ ७०॥

प्रेमज्वरो विमानार्हः अर्थहा स्वप्ननाशनः ।
उत्तारणो नामपुण्यः पापपुण्यविवर्जितः ॥ ७१॥
अपराधहरः पाल्यः स्वस्तिदः स्वस्तिभूषणः ।
पूतात्मा पूतगः पूतः पूतभावो महास्वनः ॥ ७२॥

क्षेत्रज्ञः क्षेत्रविजयी क्षेत्रवासो जगत्प्रसूः ।
भयहा भयदो भास्वान् गौणभावसमन्वितः ॥ ७३॥

मण्डितो मण्डलकरो वैजयन्तीपवित्रकः ।
चित्राङ्गश्चित्रितश्चित्रो भक्तचित्तप्रकाशकः ॥ ७४॥

बुद्धिगो बुद्धिदो बुद्धिर्बुद्धिधृग् बुद्धिवर्धनः ।
प्रेमाद्रिधृक् प्रेमवहो रतिवोढ रतिस्पृशः ॥ ७५॥

प्रेमचक्षुः प्रेमगह्वः प्रेमहृत् प्रेमपूरकः ।
गम्भीरगो बहिर्वासो भावानुष्ठितगो पतिः ॥ ७६॥

नैकरूपो नैकभावो नैकात्मा नैकरूपधृक् ।
श्लथसन्धिः क्षीणधर्मस्त्यक्तपाप उरुश्रवः ॥ ७७॥

उरुगाय उरुग्रीव उरुभाव उरुक्रमः ।
निर्धूतो निर्मलो भावो निरीहो निरनुग्रहः ॥ ७८॥

निर्धूमोऽग्निः सुप्रतापस्तीव्रतापो हुताशनः ।
एको महद्भूतव्यापी पृथग्भूतः अनेकशः ॥ ७९॥

निर्णयी निरनुज्ञातो दुष्टग्रामनिवर्तकः ।
विप्रबन्धुः प्रियो रुच्यो रोचकाङ्गो नराधिपः ॥ ८०॥

लोकाध्यक्षः सुवर्णाभः कनकाब्जः शिखामणिः ।
हेमकुम्भो धर्मसेतुर्लोकनाथो जगद्गुरुः ॥ ८१॥
लोहिताक्षो नामकर्मा भावस्थो हृद्गुहाशयः ।
रसप्राणो रतिज्येष्ठो रसाब्धिरतिराकुलः ॥ ८२॥

भावसिन्धुर्भक्तिमेघो रसवर्षी जनाकुलः ।
पीताब्जो नीलपीताभो रतिभोक्ता रसायनः ॥ ८३॥

अव्यक्तः स्वर्णराजीवो विवर्णी साधुदर्शनः ।
अमृत्युः मृत्युदोऽरुद्धः सन्धाता मृत्युवञ्चकः ॥ ८४॥

प्रेमोन्मत्तः कीर्तनर्त्तः सङ्कीर्तनपिता सुरः ।
भक्तिग्रामः सुसिद्धार्थः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ ८५॥

प्रेमोदरः प्रेमवाहू लोकभर्ता दिशाम्पतिः ।
अन्तः कृष्णो बहिर्गौरो दर्शको रतिविस्तरः ॥ ८६॥

सङ्कल्पसिद्धो वाञ्छात्मा अतुलः सच्छरीरभृत् ।
ऋड्धार्थः करुणापाङ्गो नदकृद् भक्तवत्सलः ॥ ८७॥

अमत्सरः परानन्दः कौपीनी भक्तिपोषकः ।
अकैतवो नाममाली वेगवान् पूर्णलक्षणः ॥ ८७॥

मिताशनो विवर्ताक्षो व्यवसाया व्यवस्थितः ।
रतिस्थानो रतिवनः पश्चात्तुष्टः शमाकुलः ॥ ८८॥

क्षोभणो विरभो मार्गो मार्गधृग् वर्त्मदर्शकः ।
नीचाश्रमी नीचमानी विस्तारो बीजमव्ययः ॥ ८९॥

मोहकायः सूक्ष्मगतिर्महेज्यः सत्त्ववर्धनः ।
सुमुखः स्वापनोऽनादिः सुकृत् पापविदारणः ॥ ९०॥
श्रीनिवासो गभीरात्मा शृङ्गारकनकादृतः ।
गभीरो गहनो वेधा साङ्गोपाङ्गो वृषप्रियः ॥ ९१॥

उदीर्णरागो वैचित्री श्रीकरः स्तवनार्हकः ।
अश्रुचक्षुर्जलाब्यङ्ग पूरितो रतिपूरकः ॥ ९२॥

स्तोत्रायणः स्तवाध्यक्षः स्तवनीयः स्तवाकुलः ।
ऊर्ध्वरेतः सन्निवासः प्रेममूर्तिः शतानलः ॥ ९३॥

भक्तबन्धुर्लोकबन्धुः प्रेमबन्धुः शताकुलः ।
सत्यमेधा श्रुतिधरः सर्वशस्त्रभृतांवरः ॥ ९४॥

भक्तिद्वारो भक्तिगृहः प्रेमागारो निरोधहा ।
उद्भूर्णो घूर्णितमना आघूर्नितकलेवरः ॥ ९५॥

भवभ्रान्तिजसन्देहः प्रेमराशिः शुचापहः ।
कृपाचार्यः प्रेमसङ्गो वयुनः स्थिरयौवनः ॥ ९६॥

सिन्धुगः प्रेमसङ्गाहः प्रेमवश्यो विचक्षणः ।
पद्मकिञ्ज्ल्कसङ्काशः प्रेमादारो नियामकः ॥ ९७॥

विरक्तो विगतारातिर्नापेक्षो नारददृतः ।
नतस्थो दक्षिणः क्षामः शठजीवप्रतारकः ॥ ९८॥

नामप्रवर्तकोऽनर्थो धर्मोगुर्वादिपुरुषः ।
न्यग्रोधो जनको जातो वैनत्यो भक्तिपादपः ॥ ९९॥

आत्ममोहः प्रेमलीधः आत्मभावानुगो विराट् ।
माधुर्यवत् स्वात्मरतो गौरख्यो विप्ररूपधृक् ॥ १००॥
राधारूपी महाभावी राध्यो राधनतत्परः ।
गोपीनाथात्मकोऽदृश्यः स्वाधिकारप्रसाधकः ॥ १०१॥

नित्यास्पदो नित्यरूपी नित्यभावप्रकाशकः ।
सुस्थभावश्चपलधीः स्वच्छगो भक्तिपोषकः ॥ १०२॥

सर्वत्रगस्तीर्थभूतो हृदिस्थः कमलासनः ।
सर्वभावानुगाधीशः सर्वमङ्गलकारकः ॥ १०३॥

इत्येतत्कथितं नित्यं साहस्रं नामसुन्दरम् ।
गोलोकवासिनो विष्णोर्गौररूपस्य शार्ङ्गिनः ॥ १०४॥

इदं गौरसहस्राख्याम् आमयघ्नं शुचापहम् ।
प्रेमभक्तिप्रदं नृणां गोविन्दाकर्षकं परम् ॥ १०५॥

प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्यायां मध्यरात्रिके ।
यः पठेत्प्रयतो भक्त्या चैतन्ये लभते रतिम् ॥ १०६॥

नामात्मको गौरदेवो यस्य चेतसि वर्तते ।
स सर्वं विषयं त्यक्त्वा भावानन्दो भवेद्ध्रुवम् ॥ १०७॥

यस्मै कस्मै न दातव्यम् दाने तु भक्तिहा भवेत् ।
विनीताय प्रशान्ताय गौरभक्ताय धीमते ॥ १०८॥

तस्मै देयं ततो ग्राह्यमिति वैष्णवशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीकविकर्णपूरविरचितम् श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्रस्य सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

शिक्षाष्टकम्

चेतो-दर्पण-मार्जनं भव महा-दावाग्नि निर्वापणं
श्रेयः कैरव चन्द्रिका वितरणं विद्या-वधू जीवनम् ।
आनन्द-अम्बुधि-वर्धनं प्रति-पदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्ण संकीर्तनम् ।। १ ।।

नाम्ना मकारि बहुधा निज-सर्व-शक्तिः तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः ।
एतादृशी तव कृपा भगवन्ममापि दुर्दैवमीदृश मिहाजनि नानुरागः।। २ ।।

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना ।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ।। ३ ।।

न-धनं न-जनं न-सुन्दरीम् कवितां वा जगदीश कामये ।
मम जन्मनि जन्मनि ईश्वरे भवताद् भक्तिः अहैतुकी त्वयि ।। ४ ।।

अयि नन्द-तनूज किंकरं पतितं मां विषमे-भवाम्बुधौ ।
कृपया तव पाद-पंकज स्थित धूलि-सदृशं विचिंतय ।। ५ ।।

नयनं गलद्-अश्रु-धारया वदनं गद्गद-रुद्धया गिरा ।
पुलकैर् निचितं वपुः कदा तव नाम-ग्रहणे भविष्यति ।। ६ ।।

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितं ।
शून्यायितं जगत् सर्वं गोविन्द-विरहेण मे ।। ७ ।।

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु माम्-अदर्शनान् मर्महतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो मत्प्राण नाथस्तु स एव नापरः ।। ८ ।।

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु मुख निःसृत

श्री शिवाष्टकम्

नमो नमस्ते त्रिदशेश्वराय भूतादिनाथाय मृडाय नित्यं।
गंगा-तरंगोत्थित-बालचन्द्र चूडाय गौरी-नयनोत्सवाय।। १ ।।

सुतप्त-चामीकर-चन्द्र-नील पद्म-प्रवालाम्बुद-कान्ति-वस्त्रैः।
सुनृत्य-रंगेष्ट-वर-प्रदाय कैवल्य-नाथाय वृष-ध्वजाय।। २ ।।

सुधांशु-सूर्याग्नि-विलोचनेन तमो-भिदे ते जगतः शिवाय।
सहस्र-शुभ्रांशु-सहस्र-रश्मि सहस्र-सञ्जित्त्वर-तेजसेस्तु।। ३ ।।

नागेश-रत्नोज्ज्वल-विग्रहाय शार्दूल-चर्मांशुक-दिव्य-तेजसे।
सहस्र-पत्रोपरि संस्थिताय वरांगदामुक्त-भुज-द्वयाय।। ४ ।।

सुनूपुरा-रञ्जित-पाद-पद्म क्षरत्सुधा-भृत्य-सुख-प्रदाय।
विचित्र-रत्नौघ-विभूषिताय प्रेमानम् एवाद्य हरौ विधेहि।। ५ ।।

श्रीराम गोविन्द मुकुन्द शौरे श्रीकृष्ण नारायण वासुदेव।
इत्यादि-नामामृत-पान-मत्त भृंगाधिपायाखिल-दुःख-हन्त्रे।। ६ ।।

श्रीनारदाद्यैः सततं सुगोप्य जिज्ञासितायाशु वर-प्रदाय।
तेभ्यो हरेर्भक्ति-सुख-प्रदाय शिवाय सर्व्व-गुरवे नमः।। ७ ।।

श्रीगौरी-नेत्रोत्सव मंगलाय तत्प्राण-नाथाय रसप्रदाय।
सदा समुत्कण्ठ गोविन्द-लीला गान प्रवीणाय नमोस्तु तुभ्यं।। ८ ।।

एतत् शिवस्याष्टकं अद्भुतं महत् शृण्वन् हरि-प्रेम लभेत शीघ्रं।
ज्ञानं च विज्ञानं अपूर्व वैभवं यो भावपूर्णः परमं समादरं।।

श्रीषड्गोस्वाम्यष्टकम्

कृष्णोत्कीर्तन-गान-नर्तन-परौ प्रेमामृताम्भोनिधी
धीराधीरजन-प्रियौ प्रियकरौ निर्मत्सरौ पूजितौ ।
श्रीचैतन्यकृपाभरौ भुवि भुवो भारावहन्तारकौ वन्दे
रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।। १ ।।

नानाशास्त्र विचारणैक निपुणौ सद्धर्म संस्थापकौ
लोकानां हितकारिणौ त्रिभुवने मान्यौ शरण्याकरौ ।
राधाकृष्ण पदारविन्द भजनानन्देन मत्तालिकौ
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।। २ ।।

श्रीगौरांग गुणानुवर्णन विधौ श्रद्धा समृद्धयन्वितौ
पापोत्ताप निकृन्तनौ तनुभृतां गोविन्द-गानामृतैः ।
आनन्दाम्बुधि-वर्धनैक-निपुणौ कैवल्य-निस्तारकौ
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।३।।

त्यक्त्वा तूर्णमशेष-मण्डलपति-श्रेणीं सदा तुच्छवत्
भूत्वा दीनगणेशकौ करुणया कौपीन-कन्थाश्रितौ ।
गोपीभाव-रसामृताब्धि-लहरी- कल्लोल-मग्नौ मुहु-
र्वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।।४।।

कूजत्-कोकिल-हंस-सारस-गणाकीर्णे मयूराकुले
नानारत्न- निबद्ध-मूल-विटप- श्रीयुक्त - वृन्दावने।
राधाकृष्णमहर्निशं प्रभजतौ जीवार्थदौ यौ मुदा
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।। ५ ।।

संख्यापूर्वक नामगाननतिभिः कालावसानीकृतौ
निद्राहार-विहारकादि विजितौ चात्यन्त दीनौ च यौ ।
राधाकृष्ण गुणस्मृतेर्मधुरिमानन्देन सम्मोहितौ
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।। ६ ।।

राधाकुण्ड-तटे कलिन्द-तनया-तीरे च वंशीवटे
प्रेमोन्माद वशादशेष-दशया ग्रस्तौ प्रमत्तौ सदा ।
गायन्तौ च कदा हरेर्गुणवरं भावाभिभूतौ मुदा
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।७।।

हे राधे! व्रजदेविके! च ललिते! हे नन्दसूनो! कुतः
श्रीगोवर्धन-कल्पपादप-तले कालिन्दिवन्ये कुतः ।
घोषन्ताविति सर्वतो व्रजपुरे खेदैर्महाविह्वलौ
वन्दे रूप - सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ ।। ८ ।।

स्वस्ति श्रीश्रीनिवासाचार्य विरिचितं षड्गोस्वाम्यष्टकं संपूर्णम् ।।

श्रीगुरुदेवाष्टकम् ॥

संसारदावानललीढलोक
त्राणाय कारुण्यघनाघनत्वम् ।
प्राप्तस्य कल्याणगुणार्णवस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ १॥

महाप्रभोः कीर्तननृत्यगीत
वादित्रमद्यन्मनसो रसेन ।
रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गभाजो
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ २॥

श्रीविग्रहाराधननित्यनाना
शृङ्गारतन्मन्दिरमार्जनादौ ।
युक्तस्य भक्तांश्च नियुञ्जतोऽपि
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ ३॥

चतुर्विधश्रीभगवत्प्रसाद
स्वाद्वन्नतृप्तान् हरिभक्तसङ्घान् ।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ ४॥

श्रीराधिकामाधवयोरपार
माधुर्यलीलागुणरूपनाम्नाम् ।
प्रतिक्षणास्वादनलोलुपस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ ५॥

निकुञ्जयूनो रतिकेलिसिद्ध्यै
या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया ।
तत्रातिदाक्ष्यादतिवल्लभस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ ६॥

साक्षाद्धरित्वेन समस्तशास्त्रै-
रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः ।
किन्तो प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ ७॥

यस्य प्रसादाद्भगवत्प्रसादो
यस्याप्रसादान् न गतिः कुतोऽपि ।
ध्यायन् स्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ ८॥

श्रीमद्गुरोरष्टकमेतदुच्चै-
र्ब्राह्मे मुहूर्ते पठति प्रयत्नात् ।
यस्तेन वृन्दाविपिनाथ साक्षात्
सेवैव लभ्या जुषणोऽन्त एव ॥ ९॥

स्वस्ति श्रीमद्विश्वनाथचक्रवर्तिविरचितं श्रीगुरुदेवाष्टकं सम्पूर्णम् ।

श्रीगोपालभट्टाष्टकम्

द्विजवरकुलचन्द्रो भट्टवंशप्रदीपः सुभगसुनसदीर्घो दिव्य चन्द्रास्यहासः ।
अविरत-गलधारं नेत्रयुग्मं वहन् यः परमपतितमीशः पातु गोपाल भट्टः ॥१॥

जितकरिगतिभङ्गी नाट्यसङ्गीतरङ्गी तनुभृतजनचित्तानन्दवर्द्धी सुधीरः ।
हरिचरितविलासश्चित्तचातुर्य भाषः परमपतितमीशः पातु गोपाल भट्टः ॥२॥

व्रजभुवियुवराजप्रेमपीयूषवासी तनुरुहब्रणसङ्गैः कण्टकाकारदेहः ।
गिगिगिगि गिरिधारिन् गद्गदैर्वाग्विरोधः परमपतितमीशः पातु गोपालभट्टः ॥३॥

वरतनुगुणशाली श्यामाधामा सुवेशः प्रचलितचलचिल्ली चारुनेत्रारविन्दः ।
भुजयुगफणिराजः कक्षवक्षः प्रभो यः परमपतितमीशः पातु गोपाल भट्टः ॥४॥

गणयति गुणनाम्नो राधिकामाधवस्य स्मरति मधुरवेशं गौरगोपालकस्य ।
भजति मधुरलीलावीथिपूर्वापरं यः परमपतितमीशः पातु गोपालभट्टः ॥५॥

सकलगुणगभीरः सर्वशास्त्रार्थधीरो द्रविडपुर निवासी पण्डितो वावदूकः ।
विपुलपुलकभावैर्वेष्टितो दिव्यदेहः परमपतितमीशः पातु गोपालभट्टः ॥६॥

सुमधुरधुरवेशः प्रेमदात्रैकशेषः सुजन जनसमूहे स्व-स्वभावप्रकाशः ।
गरिममहिमसङ्घादग्रगण्यो महान् यः परमपतितमीशः पातु गोपाल भट्टः ॥७॥

युगरघुवररूपः साग्रज श्रीलरूपो यदुपरि समभावः सः श्रीगोपाल भट्टः ।
सरयुगतटप्रान्ते श्रीलराधैकबन्धोः परमपतितमीशः पातु गोपाल भट्टः ॥८॥

यः पठेत् श्रावयेद्वापि भट्टाष्टकमहर्निशं । स लभेत् परां प्रीति राधामाधवयोः पदे ॥

स्वस्ति श्रीकविकर्णपूर गोस्वामि-विरचितं श्रीमद्गोपालभट्टाष्टकम् ॥

श्रीगोपालभट्ट स्तवक पञ्चक

निरवधि हरिभक्तिख्यापने यस्य शक्तिः, सतत सदनुभूतिर्नश्वरार्थे विरक्तिः ।
प्रभुवरगतिसौभाग्येन विख्यात पट्टः, स्फुरतु स हृदि मे गोस्वामिगोपालभट्टः ॥ १ ॥

व्रजभुवि गुणमञ्जर्याख्यया यः प्रसिद्धः, कलिजनकरुणाविर्भावकेन प्रयुक्तः ।
मधुररसविशेषाह्लादविस्तारणाय, स्फुरतु स हृदि मे गोस्वामिगोपालभट्टः ॥ २ ॥

अविरलगलदश्रुस्वेदाधाराभिरामः, प्रचुरपुलककम्पस्तम्भ उच्चार्य नाम ।
ह ह ह ह हरिरित्याद्यक्षरात् योऽनन्तचेताः स्फुरतु स हृदि मे गोस्वामिगोपालभट्टः॥३॥

व्रजगतनिजभावास्वादमास्वाद्यमात्रम्, नटति हसति गायत्युन्मदं-विभ्रमाढ्यः ।
कलित कलिजनोद्धाराज्ञया वाह्यदृष्टः, स्फुरतु स हृदि मे गोस्वामिगोपालभट्टः ॥४॥

विदितपदपदार्थः प्रेमभक्तेः रसार्थः, श्रितरतिरसभेदास्वादने यः समर्थः ।
इदमखिलतमोघ्नः स्तोत्ररत्नं प्रधानं, पठति भवति सोऽयं मञ्जरी यूथलीनः ॥ ५ ॥

स्वस्ति श्रीकृष्णदासकविराजकृत श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामिनः स्तवपञ्चकः समाप्तः

नगर संकीर्तन

हरि हराये नमः कृष्ण यादवाय नमः
यादवाय माधवाय केशवाय नमः।।

गोपाल गोविंद राम श्री मधुसूदन।
गिरिधारी गोपीनाथ मदनमोहन।।

श्री चैतन्य-नित्यानंद श्री अद्वैत-सीता।
हरि गुरु वैष्णव भागवत गीता।।

श्री-रूप सनातन भट्ट रघुनाथ ।
श्री जीव गोपाल-भट्ट दास रघुनाथ।।

एइ छाय् गोसाईर् कोरि चरण वंदन्।
जहां होइते विघ्न-नाश अभीष्ट-पुरण ।।

एइ छह गोसाईर जार मुइ तार दास।
ता सबार पद-रेणु मोर पंच-ग्रास।।

तादेर चरण-सेवी-भक्त-सने वास।
जनमे जनमे होय् एइ अभिलाष ।।

एइ छइ गोसाइ जबे ब्रजे कोइला बास्।
राधा-कृष्ण-नित्य-लीला कोरिला प्रकाश ।।

आनंदे बोलो हरि भज वृन्दावन।
श्री-गुरु-वैष्णव-पदे मजाइया मन ।।

श्री-गुरु-वैष्णव-पाद-पद्म कोरि आश।
नाम-संकीर्तन कहे नरोत्तम दास।।

श्रीश्रीवैष्णवाभिधानम्

प्रणम्यादौ कृपादृष्टि पवित्रीकृत भूतलम् ।
सर्व्ववाञ्छा- कल्पतरुं गुरुं श्रीपुरुषोत्तमम् ॥

महौजसो महाभागान् महापतित पावनान् ।
महाभागवतान् सर्व्वान् वैष्णवान् विष्णुरूपिणः ॥

ततः शची-जगन्नाथौ ख्यातौ भूदेव रूपिणौ ।
श्रीविश्वरूप श्रीविश्वम्भरयोः पितरौ शुभौ ॥

धन्यं श्रीकृष्णचैतन्य-चन्द्रस्याग्रज-रूपिणम् ।
शंकरारण्य-नामानं विश्वरूप-महाशयम् ॥

गदाधर- प्राणनाथं लक्ष्मी-विष्णुप्रिया-पतिम् ।
साक्षात् प्रेमकृपामूर्तिं श्रीचैतन्य महाप्रभुम् ॥

तथा पद्मावती-श्रीमन्मुकुन्दौ द्विज सत्तमौ ।
नित्यानन्द-स्वरूपस्य पितरावतुल-श्रियो ॥

श्रीमन्नित्यानन्द-चन्द्रं वसुधा-जाह्नवी-पतिम् ।
श्री वीरभद्र-जनकं सर्व्व-पाषण्ड-खण्डनम् ॥

यद्यपि प्रकृति-क्षुद्रोऽबुद्धिमान् बालकः स्वयम् ।
अनन्त-वैष्णवानन्त-महिमाख्यान- वालिशः ॥

तथापि रसना-लौल्यादत्यन्तान्तः कुतूहलात् ।
करोमि वैष्णवानन्ताभिधानं स्मरणं कियत् ॥

किन्त्वत्र मम हीनस्य सर्व्वेष्वेतन्निवेदनम् ।
क्रम-भङ्ग भवा दोषा न ग्राह्यास्तैर्गुणोदयैः ॥

श्रीमाधव-पुरी श्रीलाद्वताचार्य्यस्तथाच्युतः ।
गोपीनाथः श्रीनिवासो गोविन्दश्चन्द्रशेखरः ॥

हरिदासः श्रीमुरारि-गुप्तो नारायणस्तथा ।
मुकुन्दो वासुदेवश्च श्रीदामोदर पण्डितः ॥

पीताम्बरो जगन्नाथः श्रीनारायण शंकरौ ।
श्रीराम पण्डितश्चक्रवर्त्ति नीलाम्बरम् तथा ॥

गंगादासो द्विजो विष्णुः श्रीसुदर्शन पण्डितः ।
विद्यानिधिस्तथा बुद्धिमन्तः श्रील-सदाशिवः ॥

श्रीगर्भः श्रीनिधिः शुक्लाम्बरः श्रीधर पण्डितः ।
कविचन्द्रो रामदासो वनमाली हलायुधः ॥

विजयो नकुलाचार्य्य ईशानो गरुड़ध्वजः ।
जगदीशः सञ्जयश्च श्रीमान् काशीश्वरस्तथा ॥

गंगादामो वासुदेव-भद्रो राम-मुकुन्दको ।
श्रीवल्लभाचार्य्य-वर्यो मिश्रः श्रील-सनातनः ॥

आचार्य वनमाली च काशीनाथ-द्विजोत्तमः ।
ईश्वराभिधान-पुरी श्रीमत्केशव भारती ॥

परमानन्दाख्य-पुरी दामोदर स्वरूपकः ।
नरसिंहाख्यान - तीर्थो रामचन्द्रपुरी तथा ॥

ब्रह्मानन्द पुरी चैव श्रीसत्यानन्द भारती ।
श्रीमत्सुखानन्द-पुरी श्रीगोबिन्द पुरी तथा ॥

गरुड़ावधूत देवः पुरी राघव-संज्ञकः ।
ब्रह्मानन्द-स्वरूपश्च पुरी श्रीयुत-केशवः ॥

श्रीमद्विष्णु-पुरी विश्वेश्वरानन्द महाशयः ।
श्रीमत् चिदानन्दनामाऽनुभवानन्द एव च ॥

श्रीमत्कृष्णानन्दपुरी नृसिंहानन्द भारती ।
काशीश्वराख्यान देवोऽनुपामः श्रीसनातनः ॥

रूपो जीवः श्रीप्रबोधानन्दः शुद्ध-सरस्वती ।
रघुनाथदास नामा तथा गोपाल भट्टकः ॥

रघुनाथो लोकनाथः श्रीमद्भूगर्भ नामकः ।
राघवो जगदानन्द-पण्डितः श्रीपुरन्दरः ॥

काशीमिश्रो राय-रामानन्दो वक्रेश्वरो द्विजः ।
वाणीनाथ-पट्टनायो गोविन्दानन्द एव च ॥

सदाशिव-कविक्ष्माभृद् दासवंश-गदाधरः ।
श्रीशिवानन्द-सेनश्च श्रीमुकुन्द भिषग्वरः ॥

श्रीमन्नरहरिः श्रील-रघुनन्दन एव च ।
रघुनाथ दास वैद्योपाध्याय-मधुसूदनौ ॥

देवानन्द द्विजवरः श्रीलाचार्य्य पुरन्दरः ।
श्रीयुक्ताचार्यचन्द्रश्च श्रीकृष्णदास पण्डितः ।
सतीर्थ परमानन्दः श्रीमत्-सृष्टिधरस्तथा ।
गोविन्दो माधवो वासुदेवो घोषाभिधानभृत् ॥

श्रील-श्रीरामदासः श्रीसुन्दरानन्द एव च ।
श्रीपरमेश्वरः श्रीमत्-पुरुषोत्तम एव च ।।
श्रीकृष्णदासः श्रीगौरीदासः श्रीकमलाकरः ।
वंशीगीत-प्रकाशी श्रीवंशीवदन दासकः ॥

श्रीमदुद्धरण- श्रीलद्विज श्रीपुरुषोत्तमौ ।
कविराज -मिश्रवर्यो मधुसूदन पण्डितः ॥

श्रीमद्भागवताचार्यो गोविन्दाचार्य एव च ।
श्री सार्व्वभौमः श्रीयुक्तो नन्दनाचार्य एव च ॥

श्रीमत्-प्रतापरुद्रश्च रघुनाथो धरामरः ।
हरिदास-द्विजः श्रील-सारङ्गो मकरध्वजः ॥

श्रीवृन्दावन-दासः श्रीजगदीशाख्य-पण्डितः ।
प्रद्युम्न मिश्रस्तपनाचार्य्यः श्रीभगवांस्तथा ॥

ओड्रजः श्रीविप्रदासोऽम्वष्ठ-श्रीविष्णुदासकः ।
वनमाली-दास-वैद्यो हरिदासो गदाधरः ॥

ओड्रजः श्रीकृष्णदासः श्रीकाशीश्वर-पण्डितः ।
बलराम-जगन्नाथ-दासौ श्रीचन्दनेश्वरः ॥

सिंहेश्वरः शिवानन्दो बलराम- महत्तमः ।
सुबुद्धि-मिश्रस्तुलसी-मिश्रः श्रीनाथ-संज्ञकः ॥

काशीनाथो हरिभट्टः पट्टनायक-माधवः ।
रामानन्द-वसुर्ब्रह्मचारी श्रीपुरुषोत्तमः ॥

श्रीरामचन्द्र-भूदेवः श्रीमच्छ्रीकर-पण्डितः ।
यदुनाथ-कविचन्द्रः पण्डितः श्रीधनञ्जयः ॥

आचार्य श्रीजगन्नाथः श्रीसूर्यदास-पण्डितः ।
श्रील-श्रीलक्ष्मणाचार्यः श्रीकृष्णाचार्य एव च ॥

चैतन्यदासः परमानन्द-गुप्त-भिषग्वरः ।
श्रीजगन्नाथ-कंसारि-सेनौ श्रीयुक्त भास्करः ॥

कविचन्द्र-श्रीमुकुन्दः श्रीरामः सेन-वल्लभः ।
श्रीयुक्त-बलरामाख्य-दासो महेश-पण्डितः ॥

परमानन्दावधूतः श्रीगंगादास पण्डितः ।
कविराज श्रीमुकुन्दानन्दः श्रीजीव-पण्डितः ॥

चिरञ्जीवः कृष्णदासः कृष्णदासाख्य-बालकः ।
यदुनाथ दास-वर्य्यः श्रीकृष्णदास पण्डितः ॥

राम-तीर्थः कृष्ण-तीर्थः पुरी श्रीपुरुषोत्तमः ।
श्रीमज्जगन्नाथ-तीर्थो रघुनाथ-पुरी तथा ॥

श्रीवासुदेव-तीर्थश्च श्रीलोपेन्द्राभिधाश्रमः ।
अनन्ताभिधान-पुरी हरिहरानन्द-भारती ॥

श्रीमन्नृसिंहचैतन्यः श्रीमदाचार्य-माधवः ।
शंकरो माधवानन्दाचार्यो दास-सनातनः ।
शिवानन्द चक्रवर्त्ति-द्विजनारायणादयः ॥

य एतान् स्मरति प्रातः श्रृणुतेवापि भक्तितः ।
कस्मिन् कालेऽपि स पुमान् यातनां नार्हति ध्रुवम् ॥

एतान् संस्मृत्य संस्मृत्य यो नमस्कुरुते जनः ।
श्रीवैष्णव-पदे तस्य नापराधः कदाचन ॥

लभते वैष्णव-पदमेतेषां स्मृतिमात्रतः ।
भक्तिञ्च प्रेम-पीयूष-मधुरां देवदुर्लभाम् ॥

सर्व्वेषामप्युपादेयः सर्व्ववेदाधिकस्तथा।
श्रवणान् नयनाश्चित्तादपि दूरो हि वैष्णवः ॥

स्वस्ति श्रील-देवकीनन्दन-कविराज-विरचितं श्रीश्रीवैष्णवाभिधानं सम्पूर्णम् ।

श्रीगजेन्द्रमोक्षः

श्रीशुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनोहृदि ।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ॥ १॥

गजेन्द्र उवाच

नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम् ।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥ २॥

यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम् ।
योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ॥ ३॥

यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम् ।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः ॥ ४॥

कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु ।
तमस्तदाऽऽसीद्गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः ॥ ५॥

न यस्यदेवा ऋषयःपदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम् ।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु ॥ ६॥

दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्त सङ्गा मुनयः सुसाधवः ।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ॥ ७॥

न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा ।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥ ८॥

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥ ९॥

नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ॥ १०॥

सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ॥ ११॥

नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥ १२॥

क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे ।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥ १३॥

सर्वेन्द्रियगुणदृष्टे सर्व प्रत्यय हेतवे ।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥ १४॥

नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय ।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय ॥ १५॥

गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम स्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि ॥ १६॥

मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय ।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥ १७॥

आत्माऽऽत्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय ।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥ १८॥

यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति ।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ॥ १९॥

एकान्तिनो यस्य न कञ्चनार्थं वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः ।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥ २०॥

तमक्षरम्ब्रह्म परं परेश मव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूर मनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥ २१॥

यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नामरूपविभेदेन फल्व्या च कलया कृताः ॥ २२॥

यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत्स्वरोचिषः ।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥ २३॥

स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्डो न पुमान न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन् निषेधशेषो जयतादशेषः ॥ २४॥

जिजीविषे नाहमिहामुया कि मन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लव स्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥ २५॥

सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ॥ २६॥

योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ॥ २७॥

नमो नमस्तुभ्यमसह्य वेग शक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥ २८॥

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहन्धिया हतम् ।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ॥ २९॥

श्रीशुक उवाच

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः ।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात् तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ॥ ३०॥

तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवभिः ।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमान श्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ॥ ३१॥

सोऽन्तस्सरस्युरुबलेन गृहीत आर्त्तो दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम् ।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रान्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते ॥ ३२॥

तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार ।
ग्राहाद्विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम् ॥ ३३॥

स्वस्तिश्रीमद्भागवते महापुरराणे संहितायामष्टस्कन्धे
श्रीगजेन्द्रमोक्षणं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥

श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

नमः समस्त भूतानां आदिभूतायभूभृते ।
अनेक रूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

श्रीवैशम्पायन उवाच-
श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥१॥

युधिष्ठिर उवाच-
किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥२॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥३॥

भीष्म उवाच-
जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन् नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥४॥

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन् स्तुवन् नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥५॥

अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥६॥

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥७॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥८॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥९॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं दैवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१०॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥११॥

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥१२॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१३॥

अथ स्तोत्रम्

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१॥

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥२॥

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥३॥

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥४॥

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥५॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥६॥

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥७॥

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥८॥

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥९॥

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥१०॥

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥११॥

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्माऽसम्मितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥१२॥

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥१३॥

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः ॥१४॥

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥१५॥

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥१६॥

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रः सङ्ग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥१७॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥१८॥

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥१९॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥२०॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥२१॥

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥२२॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥२३॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥२४॥

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥२५॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥२६॥

असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥२७॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥२८॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥२९॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥३०॥

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥३१॥

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥३२॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥३३॥

इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥३४॥

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥३५॥

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥३६॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥३७॥

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥३८॥

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः ॥३९॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥४०॥

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥४१॥

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥४२॥

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥४३॥

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥४४॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥४५॥

विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥४६॥

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥४७॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥४८॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥४९॥

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥५०॥

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥५१॥

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥५२॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥५३॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वताम्पतिः ॥५४॥

जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥५५॥

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥५६॥

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥५७॥

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥५८॥

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥५९॥

भगवान् भगहाऽऽनन्दी वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥६०॥

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिवस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥६१॥

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥६२॥

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥६३॥

अनिवर्ती निवृत्तात्मा सङ्क्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः ॥६४॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥६५॥

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।
विजितात्माऽविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥६६॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥६७॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥६८॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥६९॥

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥७०॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥७१॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥७२॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥७३॥

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥७४॥

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥७५॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥७६॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥७७॥

एको नैकः सवः कः किं यत् तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥७८॥

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥७९॥

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥८०॥

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ॥८१॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥८२॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥८३॥

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥८४॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥८५॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥८६॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥८७॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोऽदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥८८॥

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥८९॥

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥९०॥

भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥९१॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः ॥९२॥

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः ॥९३॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥९४॥

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥९५॥

सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥९६॥

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥९७॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणांवरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥९८॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥९९॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥१००॥

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥१०१॥

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥१०२॥

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥१०३॥

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥१०४॥

यज्ञभृद् यज्ञकृद् यज्ञी यज्ञभुग् यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद् यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥१०५॥

आत्मयोनिः स्वयञ्जातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥१०६॥

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१०७॥

सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति।

भीष्म उवाच

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥१॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥२॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥३॥

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥४॥

भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥५॥

यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥६॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ॥७॥

रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥८॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥९॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥१०॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥११॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥१२॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१३॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥१४॥

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥१५॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥१६॥

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्प्यते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१७॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥१८॥

योगो ज्ञानं तथा साङ्ख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥१९॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींल्लोकान्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥२०॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥२१॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभुमव्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥२२॥

न ते यान्ति पराभवम् ॐ नम इति ।

स्वस्ति श्रीवैशम्पायनोक्तं श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् सम्पूर्णं ॥

श्रीमद्भागवतान्तर्गत रासपञ्चाध्यायी

।। श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ।।

।। एकोनत्रिंशोऽध्यायः - २९ ।।

श्रीशुक उवाच

भगवानपि ता रात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ।
वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ।। १ ।।

तदोडुराजः ककुभः करैर्मुखं
प्राच्या विलिम्पन्नरुणेन शन्तमैः ।
स चर्षणीनामुदगाच्छुचो मृजन्
प्रियः प्रियाया इव दीर्घदर्शनः ।। २ ।।

दृष्ट्वा कुमुद्वन्तमखण्डमण्डलं
रमाननाभं नवकुङ्कुमारुणं
वनं च तत्कोमलगोभिरञ्जितं
जगौ कलं वामदृशां मनोहरम् ।। ३।।

निशम्य गीतं तदनङ्गवर्धनं
व्रजस्त्रियः कृष्णगृहीतमानसाः ।
आजग्मुरन्योन्यमलक्षितोद्यमाः
स यत्र कान्तो जवलोलकुण्डलाः ।। ४ ।।

दुहन्त्योऽभिययुः काश्चिद् दोहं हित्वा समुत्सुकाः ।
पयोऽधिश्रित्य संयावमनुद्वास्यापरा ययुः ।। ५ ।।

परिवेषयन्त्यस्तद्धित्वा पाययन्त्यः शिशून् पयः ।
शुश्रूषन्त्यः पतीन् काश्चिदश्नन्त्योऽपास्य भोजनम् ।। ६ ।।

लिम्पन्त्यः प्रमृजन्त्योऽन्या अञ्जन्त्यः काश्च लोचने ।
व्यत्यस्तवस्त्राभरणाः काश्चित्कृष्णान्तिकं ययुः ।। ७ ।।

ता वार्यमाणाः पतिभिः पितृभिर्भ्रातृबन्धुभिः ।
गोविन्दापहृतात्मानो न न्यवर्तन्त मोहिताः ।। ८ ।।

अन्तर्गृहगताः काश्चिद् गोप्योऽलब्धविनिर्गमाः ।
कृष्णं तद्भावनायुक्ता दध्युर्मीलितलोचनाः ।। ९ ।।

दुःसहप्रेष्ठविरहतीव्रतापधुताशुभाः ।
ध्यानप्राप्ताच्युताश्लेषनिर्वृत्या क्षीणमङ्गलाः ।। १० ।।

तमेव परमात्मानं जारबुद्ध्यापि सङ्गताः ।
जहुर्गुणमयं देहं सद्यः प्रक्षीणबन्धनाः ।। ११ ।।

राजोवाच

कृष्णं विदुः परं कान्तं न तु ब्रह्मतया मुने ।
गुणप्रवाहोपरमस्तासां गुणधियां कथम् ।। १२ ।।

श्रीशुक उवाच

उक्तं पुरस्तादेतत्ते चैद्यः सिद्धिं यथा गतः ।
द्विषन्नपि हृषीकेशं किमुताधोक्षजप्रियाः ।। १३ ।।

नृणां निःश्रेयसार्थाय व्यक्तिर्भगवतो नृप ।
अव्ययस्याप्रमेयस्य निर्गुणस्य गुणात्मनः ।। १४ ।।

कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेव च ।
नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हि ते ।। १५ ।।

न चैवं विस्मयः कार्यो भवता भगवत्यजे ।
योगेश्वरेश्वरे कृष्णे यत एतद्विमुच्यते ।। १६ ।।

ता दृष्ट्वान्तिकमायाता भगवान् व्रजयोषितः ।
अवदद्वदतां श्रेष्ठो वाचः पेशैर्विमोहयन् ।। १७ ।।

श्रीभगवानुवाच

स्वागतं वो महाभागाः प्रियं किं करवाणि वः ।
व्रजस्यानामयं कच्चिद् ब्रूतागमनकारणम् ।। १८ ।।

रजन्येषा घोररूपा घोरसत्त्वनिषेविता ।
प्रतियात व्रजं नेह स्थेयं स्त्रीभिः सुमध्यमाः ।। १९ ।।

मातरः पितरः पुत्रा भ्रातरः पतयश्च वः ।
विचिन्वन्ति ह्यपश्यन्तो मा कृढ्वं बन्धुसाध्वसम् ।। २० ।।

दृष्टं वनं कुसुमितं राकेशकररञ्जितम् ।
यमुनानिललीलैजत्तरुपल्लवशोभितम् ।। २१ ।।

तद्यात मा चिरं गोष्ठं शुश्रूषध्वं पतीन् सतीः ।
क्रन्दन्ति वत्सा बालाश्च तान्पाययत दुह्यत ।। २२ ।।

अथ वा मदभिस्नेहाद्भवत्यो यन्त्रिताशयाः ।
आगता ह्युपपन्नं वः प्रीयन्ते मयि जन्तवः ।। २३ ।।

भर्तुः शुश्रूषणं स्त्रीणां परो धर्मो ह्यमायया ।
तद्बन्धूनां च कल्याण्यः प्रजानां चानुपोषणम् ।। २४ ।।

दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जडो रोग्यधनोऽपि वा ।
पतिः स्त्रीभिर्न हातव्यो लोकेप्सुभिरपातकी ।। २५ ।।

अस्वर्ग्यमयशस्यं च फल्गु कृच्छ्रं भयावहम् ।
जुगुप्सितं च सर्वत्र औपपत्यं कुलस्त्रियाः ।। २६ ।।

श्रवणाद् दर्शनाद् ध्यानान्मयि भावोऽनुकीर्तनात् ।
न तथा सन्निकर्षेण प्रतियात ततो गृहान् ।। २७ ।।

श्रीशुक उवाच

इति विप्रियमाकर्ण्य गोप्यो गोविन्दभाषितम् ।
विषण्णा भग्नसङ्कल्पाश्चिन्तामापुर्दुरत्ययाम् ।। २८ ।।

कृत्वा मुखान्यव शुचः श्वसनेन शुष्यद्
बिम्बाधराणि चरणेन भुवं लिखन्त्यः ।
अस्त्रैरुपात्तमषिभिः कुचकुङ्कुमानि
तस्थुर्मृजन्त्य उरुदुःखभराः स्म तूष्णीम् ।। २९ ।।

प्रेष्ठं प्रियेतरमिव प्रतिभाषमाणं
कृष्णं तदर्थविनिवर्तितसर्वकामाः ।
नेत्रे विमृज्य रुदितोपहते स्म किञ्चित्
संरम्भगद्गदगिरोऽब्रुवतानुरक्ताः ।। ३० ।।

गोप्य ऊचुः

मैवं विभोऽर्हति भवान् गदितुं भवान् नृशंसं
सन्त्यज्य सर्वविषयांस्तवपादमूलम् ।
भक्ता भजस्व दुरवग्रह मा त्यजास्मान्
देवो यथाऽऽदिपुरुषो भजते मुमुक्षून् ।। ३१ ।।

यत्पत्यपत्यसुहृदामनुवृत्तिरङ्ग
स्त्रीणां स्वधर्म इति धर्मविदा त्वयोक्तम् ।
अस्त्वेवमेतदुपदेश पदे त्वयीशे
प्रेष्ठो भवांस्तनुभृतां किल बन्धुरात्मा ।। ३२ ।।

कुर्वन्ति हि त्वयि रतिं कुशलाः स्व आत्मन्
नित्यप्रिये पतिसुतादिभिरार्तिदैः किम् ।
तन्नः प्रसीद परमेश्वर मा स्म छिन्द्या
आशां धृतां त्वयि चिरादरविन्दनेत्र ।। ३३ ।।

चित्तं सुखेन भवतापहृतं गृहेषु
यन्निर्विशत्युत करावपि गृह्यकृत्ये ।
पादौ पदं न चलतस्तव पादमूलात्
यामः कथं व्रजमथो करवाम किं वा ।। ३४ ।।

सिञ्चाङ्ग नस्त्वदधरामृतपूरकेण
हासावलोककलगीतजहृच्छयाग्निम् ।
नो चेद्वयं विरहजाग्न्युपयुक्तदेहा
ध्यानेन याम पदयोः पदवीं सखे ते ।। ३५ ।।

यर्ह्यम्बुजाक्ष तव पादतलं रमाया
दत्तक्षणं क्वचिदरण्यजनप्रियस्य ।
अस्प्राक्ष्म तत्प्रभृति नान्यसमक्षमङ्ग
स्थातुं त्वयाभिरमिता बत पारयामः ।। ३६ ।।

श्रीर्यत्पदाम्बुजरजश्चकमे तुलस्या
लब्ध्वापि वक्षसि पदं किल भृत्यजुष्टम् ।
यस्याः स्ववीक्षणकृतेऽन्यसुरप्रयासः
तद्वद्वयं च तव पादरजः प्रपन्नाः ।। ३७ ।।

तन्नः प्रसीद वृजिनार्दन तेऽङ्घ्रिमूलं
प्राप्ता विसृज्य वसतीस्त्वदुपासनाशाः ।
त्वत्सुन्दरस्मितनिरीक्षणतीव्रकाम -
तप्तात्मनां पुरुषभूषण देहि दास्यम् ।। ३८ ।।

वीक्ष्यालकावृतमुखं तव कुण्डलश्री -
गण्डस्थलाधरसुधं हसितावलोकम् ।
दत्ताभयं च भुजदण्डयुगं विलोक्य
वक्षःश्रियैकरमणं च भवाम दास्यः ।। ३९ ।।

का स्त्र्यङ्ग ते कलपदायतमूर्च्छितेन
सम्मोहिताऽऽर्यचरितान्न चलेत्त्रिलोक्याम् ।
त्रैलोक्यसौभगमिदं च निरीक्ष्य रूपं
यद्गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यबिभ्रन् ।। ४० ।।

व्यक्तं भवान् व्रजभयार्तिहरोऽभिजातो भवान्
देवो यथाऽऽदिपुरुषः सुरलोकगोप्ता ।
तन्नो निधेहि करपङ्कजमार्तबन्धो
तप्तस्तनेषु च शिरस्सु च किङ्करीणाम् ।। ४१ ।।

श्रीशुक उवाच

इति विक्लवितं तासां श्रुत्वा योगेश्वरेश्वरः ।
प्रहस्य सदयं गोपीः आत्मारामोऽप्यरीरमत् ।। ४२ ।।

ताभिः समेताभिरुदारचेष्टितः
प्रियेक्षणोत्फुल्लमुखीभिरच्युतः ।
उदारहासद्विजकुन्ददीधितिः
व्यरोचतैणाङ्क इवोडुभिर्वृतः ।। ४३ ।।

उपगीयमान उद्गायन् वनिताशतयूथपः ।
मालां बिभ्रद्वैजयन्तीं व्यचरन्मण्डयन् वनम् ।। ४४।।

नद्याः पुलिनमाविश्य गोपीभिर्हिमवालुकम् ।
रेमे तत्तरलानन्दकुमुदामोदवायुना ।। ४५ ।।

बाहुप्रसारपरिरम्भकरालकोरु-
नीवीस्तनालभननर्मनखाग्रपातैः ।
क्ष्वेल्यावलोकहसितैर्व्रजसुन्दरीणा -
मुत्तम्भयन् रतिपतिं रमयाञ्चकार ।। ४६ ।।

एवं भगवतः कृष्णाल्लब्धमाना महात्मनः ।
आत्मानं मेनिरे स्त्रीणां मानिन्योऽभ्यधिकं भुवि ।। ४७ ।।

तासां तत्सौभगमदं वीक्ष्य मानं च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ।। ४८ ।।

स्वस्ति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे पूर्वार्धे भगवतो रासक्रीडावर्णनं नाम
एकोनत्रिंशोऽध्यायः ।। २९ ।।

।। त्रिंशोऽध्यायः - ३० ।।

श्रीशुक उवाच

अन्तर्हिते भगवति सहसैव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्य इव यूथपम् ।। १ ।।

गत्यानुरागस्मितविभ्रमेक्षितैः
मनोरमालापविहारविभ्रमैः ।
आक्षिप्तचित्ताः प्रमदा रमापते
स्तास्ता विचेष्टा जगृहुस्तदात्मिकाः ।। २ ।।

गतिस्मितप्रेक्षणभाषणादिषु
प्रियाः प्रियस्य प्रतिरूढमूर्तयः ।
असावहं त्वित्यबलास्तदात्मिका
न्यवेदिषुः कृष्णविहारविभ्रमाः ।। ३ ।।

गायन्त्य उच्चैरमुमेव संहता
विचिक्युरुन्मत्तकवद्वनाद्वनम् ।
पप्रच्छुराकाशवदन्तरं बहि
र्भूतेषु सन्तं पुरुषं वनस्पतीन् ।। ४ ।।

दृष्टो वः कच्चिदश्वत्थ प्लक्ष न्यग्रोध नो मनः ।
नन्दसूनुर्गतो हृत्वा प्रेमहासावलोकनैः ।। ५ ।।

कच्चित्कुरबकाशोक नागपुन्नागचम्पकाः ।
रामानुजो मानिनीनामितो दर्पहरस्मितः ।। ६ ।।

कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविन्दचरणप्रिये ।
सह त्वालिकुलैर्बिभ्रद् दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ।। ७ ।।

मालत्यदर्शि वः कच्चिन्मल्लिके जाति यूथिके ।
प्रीतिं वो जनयन् यातः करस्पर्शेन माधवः ।। ८ ।।

चूतप्रियालपनसासनकोविदार -
जम्ब्वर्कबिल्वबकुलाम्रकदम्बनीपाः ।
येऽन्ये परार्थभवका यमुनोपकूलाः
शंसन्तु कृष्णपदवीं रहितात्मनां नः ।। ९ ।।

किं ते कृतं क्षिति तपो बत केशवाङ्घ्रि -
स्पर्शोत्सवोत्पुलकिताङ्गरुहैर्विभासि ।
अप्यङ्घ्रिसम्भव उरुक्रमविक्रमाद्वा
आहो वराहवपुषः परिरम्भणेन ।। १० ।।

अप्येणपत्न्युपगतः प्रिययेह गात्रै-
स्तन्वन् दृशां सखि सुनिर्वृतिमच्युतो वः ।
कान्ताङ्गसङ्ग कुचकुङ्कुम रञ्जितायाः
कुन्दस्रजः कुलपतेरिह वाति गन्धः ।। ११ ।।

बाहुं प्रियांस उपधाय गृहीतपद्मो
रामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदान्धैः ।
अन्वीयमान इह वस्तरवः प्रणामं
किं वाभिनन्दति चरन् प्रणयावलोकैः ।। १२ ।।

पृच्छतेमा लता बाहूनप्याश्लिष्टा वनस्पतेः ।
नूनं तत्करजस्पृष्टा बिभ्रत्युत्पुलकान्यहो ।। १३ ।।

इत्युन्मत्तवचो गोप्यः कृष्णान्वेषणकातराः ।
लीला भगवतस्तास्ता ह्यनुचक्रुस्तदात्मिकाः ।। १४ ।।

कस्याश्चित् पूतनायन्त्याः कृष्णायन्त्यपिबत् स्तनम् ।
तोकायित्वा रुदत्यन्या पदाहन् शकटायतीम् ।। १५ ।।

दैत्यायित्वा जहारान्यामेका कृष्णार्भभावनाम् ।
रिङ्गयामास काप्यङ्घ्री कर्षन्ती घोषनिःस्वनैः ।। १६ ।।

कृष्णरामायिते द्वे तु गोपायन्त्यश्च काश्चन ।
वत्सायतीं हन्ति चान्या तत्रैका तु बकायतीम् ।। १७ ।।

आहूय दूरगा यद्वत्कृष्णस्तमनुकुर्वतीम् ।
वेणुं क्वणन्तीं क्रीडन्तीमन्याः शंसन्ति साध्विति ।। १८ ।।

कस्याञ्चित्स्वभुजं न्यस्य चलन्त्याहापरा ननु ।
कृष्णोऽहं पश्यत गतिं ललितामिति तन्मनाः ।। १९ ।।

मा भैष्ट वातवर्षाभ्यां तत्त्राणं विहितं मया ।
इत्युक्त्वैकेन हस्तेन यतन्त्युन्निदधेऽम्बरम् ।। २० ।।

आरुह्यैका पदाऽऽक्रम्य शिरस्याहापरां नृप ।
दुष्टाहे गच्छ जातोऽहं खलानां ननु दण्डधृक् ।। २१ ।।

तत्रैकोवाच हे गोपा दावाग्निं पश्यतोल्बणम् ।
चक्षूंष्याश्वपिदध्वं वो विधास्ये क्षेममञ्जसा ।। २२ ।।

बद्धान्यया स्रजा काचित्तन्वी तत्र उलूखले ।
भीता सुदृक् पिधायास्यं भेजे भीतिविडम्बनम् ।। २३ ।।

एवं कृष्णं पृच्छमाना वृन्दावनलतास्तरून् ।
व्यचक्षत वनोद्देशे पदानि परमात्मनः ।। २४ ।।

पदानि व्यक्तमेतानि नन्दसूनोर्महात्मनः ।
लक्ष्यन्ते हि ध्वजाम्भोजवज्राङ्कुशयवादिभिः ।। २५ ।।

तैस्तैः पदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽग्रतोऽबलाः ।
वध्वाः पदैः सुपृक्तानि विलोक्यार्ताः समब्रुवन् ।। २६ ।।

कस्याः पदानि चैतानि याताया नन्दसूनुना ।
अंसन्यस्तप्रकोष्ठायाः करेणोः करिणा यथा ।। २७ ।।

अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः ।
यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः ।। २८ ।।

धन्या अहो अमी आल्यो गोविन्दाङ्घ्र्यब्जरेणवः ।
यान् ब्रह्मेशौ रमादेवी दधुर्मूर्ध्न्यं घनुत्तये ।। २९ ।।

तस्या अमूनि नः क्षोभं कुर्वन्त्युच्चैः पदानि यत् ।
यैकापहृत्य गोपीनां रहो भुङ्क्तेऽच्युताधरम् ।। ३० ।।

न लक्ष्यन्ते पदान्यत्र तस्या नूनं तृणाङ्कुरैः ।
खिद्यत्सुजाताङ्घ्रि तला मुन्निन्ये प्रेयसीं प्रियः ।। ३१ ।।

इमान्यधिकमग्नानि पदानि वहतो वधूम् ।
गोप्यः पश्यत कृष्णस्य भाराक्रान्तस्य कामिनः ।। ३२ ।।

अत्रावरोपिता कान्ता पुष्पहेतोर्महात्मना ।
अत्र प्रसूनावचयः प्रियार्थे प्रेयसा कृतः ।
प्रपदाक्रमणे एते पश्यतासकले पदे ।। ३३ ।।

केशप्रसाधनं त्वत्र कामिन्याः कामिना कृतम् ।
तानि चूडयता कान्तामुपविष्टमिह ध्रुवम् ।। ३४ ।।

रेमे तया चात्मरत आत्मारामोऽप्यखण्डितः ।
कामिनां दर्शयन् दैन्यं स्त्रीणां चैव दुरात्मताम् ।। ३५ ।।

इत्येवं दर्शयन्त्यस्ताश्चेरुर्गोप्यो विचेतसः ।
यां गोपीमनयत्कृष्णो विहायान्याः स्त्रियो वने ।। ३६ ।।

सा च मेने तदाऽऽत्मानं वरिष्ठं सर्वयोषिताम् ।
हित्वा गोपीः कामयाना मामसौ भजते प्रियः ।। ३७ ।।

ततो गत्वा वनोद्देशं दृप्ता केशवमब्रवीत् ।
न पारयेऽहं चलितुं नय मां यत्र ते मनः ।। ३८ ।।

एवमुक्तः प्रियामाह स्कन्ध आरुह्यतामिति ।
ततश्चान्तर्दधे कृष्णः सा वधूरन्वतप्यत ।। ३९ ।।

हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभुज ।
दास्यास्ते कृपणाया मे सखे दर्शय सन्निधिम् ।। ४० ।।

अन्विच्छन्त्यो भगवतो मार्गं गोप्योऽविदूरितः ।
ददृशुः प्रियविश्लेषमोहितां दुःखितां सखीम् ।। ४१ ।।

तया कथितमाकर्ण्य मानप्राप्तिं च माधवात् ।
अवमानं च दौरात्म्याद् विस्मयं परमं ययुः ।। ४२ ।।

ततोऽविशन् वनं चन्द्रज्योत्स्ना यावद्विभाव्यते ।
तमः प्रविष्टमालक्ष्य ततो निववृतुः स्त्रियः ।। ४३ ।।

तन्मनस्काः तदालापाः तद्विचेष्टास्तदात्मिकाः ।
तद्गुणानेव गायन्त्यो नात्मागाराणि सस्मरुः ।। ४४ ।।

पुनः पुलिनमागत्य कालिन्द्याः कृष्णभावनाः ।
समवेता जगुः कृष्णं तदागमनकाङ्क्षिताः ।। ४५ ।।

स्वस्तिश्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां कृष्णान्वेषणं नाम
त्रिंशोऽध्यायः ।। ३० ।।

।। एकत्रिंशोऽध्यायः - ३१ ।।

गोप्य ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका-
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ।। १ ।।

शरदुदाशये साधुजातसत्
सरसिजोदर श्रीमुषा दृशा ।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका
वरद निघ्नतो नेह किं वधः ।। २ ।।

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात् ।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया -
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ।। ३ ।।

न खलु गोपिकानन्दनो भवान्
अखिलदेहिनामन्तरात्मदृक् ।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतांकुले ।। ४ ।।

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।
करसरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ।। ५ ।।

व्रजजनार्तिहन् वीरयोषितां
निजजनस्मय ध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किङ्करीः स्म नो
जलरुहाननं चारु दर्शय ।। ६ ।।

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं
तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं
कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ।। ७ ।।

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यती -
रधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ।। ८ ।।

तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं
भुविगृणन्ति ते भूरिदा जनाः ।। ९ ।।

प्रहसितं प्रियप्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः
कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ।। १० ।।

चलसि यद्व्रजाच्चारयन् पशून्
नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः
कलिलतां मनः कान्त गच्छति ।। ११ ।।

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै-
र्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहु-
र्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ।। १२ ।।

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं
धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।
चरणपङ्कजं शन्तमं च ते
रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ।। १३ ।।

सुरतवर्धनं शोकनाशनं
स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतरराग-विस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ।। १४ ।।

अटति यद्भवानह्नि काननं
त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते
जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद्दृशाम् ।। १५ ।।

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवा -
नतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः
कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ।। १६ ।।

रहसि संविदं हृच्छयोदयं
प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते
मुहुरति स्पृहा मुह्यते मनः ।। १७ ।।

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते
वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् ।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ।। १८ ।।

यत्ते सुजात चरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किंस्वित्
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ।। १९ ।।

स्वस्तिश्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां गोपिकागीतं
नामैकत्रिंशोऽध्यायः ।। ३१ ।।

।। द्वात्रिंशोऽध्यायः - ३२ ।।

श्रीशुक उवाच

इति गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलपन्त्यश्च चित्रधा ।
रुरुदुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शनलालसाः ।। १ ।।

तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः ।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ।। २ ।।

तं विलोक्यागतं प्रेष्ठं प्रीत्युत्फुल्लदृशोऽबलाः ।
उत्तस्थुर्युगपत् सर्वास्तन्वः प्राणमिवागतम् ।। ३ ।।

काचित्कराम्बुजं शौरेर्जगृहेऽञ्जलिना मुदा ।
काचिद् दधार तद् बाहुमंसे चन्दनरूषितम् ।। ४ ।।

काचिदञ्जलिनागृह्णात् तन्वी ताम्बूलचर्वितम् ।
एका तदङ्घ्रिकमलं सन्तप्ता स्तनयोरधात् ।। ५ ।।

एका भ्रुकुटिमाबध्य प्रेमसंरम्भविह्वला ।
घ्नन्तीवैक्षत्कटाक्षेपैः सन्दष्टदशनच्छदा ।। ६ ।।

अपरानिमिषद्दृग्भ्यां जुषाणा तन्मुखाम्बुजम् ।
आपीतमपि नातृप्यत् सन्तस्तच्चरणं यथा ।। ७ ।।

तं काचिन्नेत्ररन्ध्रेण हृदिकृत्य निमील्य च ।
पुलकाङ्ग्युपगुह्यास्ते योगीवानन्दसम्प्लुता ।। ८ ।।

सर्वास्ताः केशवालोक परमोत्सवनिर्वृताः ।
जहुर्विरहजं तापं प्राज्ञं प्राप्य यथा जनाः ।। ९ ।।

ताभिर्विधूतशोकाभिः भगवानच्युतो वृतः ।
व्यरोचताधिकं तात पुरुषः शक्तिभिर्यथा ।। १० ।।

ताः समादाय कालिन्द्या निर्विश्य पुलिनं विभुः ।
विकसत्कुन्दमन्दार सुरभ्यनिलषट्पदम् ।। ११ ।।

शरच्चन्द्रांशुसन्दोह ध्वस्तदोषातमः शिवम् ।
कृष्णाया हस्ततरलाचित कोमलवालुकम् ।। १२ ।।

तद्दर्शनाह्लादविधूतहृद्रुजो
मनोरथान्तं श्रुतयो यथा ययुः ।
स्वैरुत्तरीयैः कुचकुङ्कुमाङ्कितै-
रचीक्लृपन्नासनमात्मबन्धवे ।। १३ ।।

तत्रोपविष्टो भगवान् स ईश्वरो
योगेश्वरान्तर्हृदि कल्पितासनः ।
चकास गोपीपरिषद्गतोऽर्चित -
स्त्रैलोक्यलक्ष्म्येकपदं वपुर्दधत् ।। १४ ।।

सभाजयित्वा तमनङ्गदीपनं
सहासलीलेक्षणविभ्रमभ्रुवा ।
संस्पर्शनेनाङ्ककृताङ्घ्रिहस्तयोः
संस्तुत्य ईषत्कुपिता बभाषिरे ।। १५ ।।

गोप्य ऊचुः

भजतोऽनुभजन्त्येक एक एतद्विपर्ययम् ।
नोभयांश्च भजन्त्येक एतन्नो ब्रूहि साधु भोः ।। १६ ।।

श्रीभगवानुवाच

मिथो भजन्ति ये सख्यः स्वार्थैकान्तोद्यमा हि ते ।
न तत्र सौहृदं धर्मः स्वार्थार्थं तद्धि नान्यथा ।। १७ ।।

भजन्त्यभजतो ये वै करुणाः पितरौ यथा ।
धर्मो निरपवादोऽत्र सौहृदं च सुमध्यमाः ।। २८ ।।

भजतोऽपि न वै केचिद् भजन्त्यभजतः कुतः ।
आत्मारामा ह्याप्तकामा अकृतज्ञा गुरुद्रुहः ।। १९ ।।

नाहं तु सख्यो भजतोऽपि जन्तून्
भजाम्यमीषामनुवृत्तिवृत्तये ।
यथाधनो लब्धधने विनष्टे
तच्चिन्तयान्यन्निभृतो न वेद ।। २० ।।

एवं मदर्थोज्झितलोकवेद -
स्वानां हि वो मय्यनुवृत्तयेऽबलाः ।
मया परोक्षं भजता तिरोहितं
मासूयितुं मार्हथ तत्प्रियं प्रियाः ।। २१ ।।

न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां
स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः ।
या माभजन् दुर्जरगेहशृङ्खलाः
संवृश्च्य तद्वः प्रतियातु साधुना ।। २२ ।।

स्वस्तिश्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे पूर्वर्धे रासक्रीडायां गोपीसान्त्वनं नाम
द्वात्रिंशोऽध्यायः ।। ३२ ।।

।। त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ।।

श्रीशुक उवाच

इत्थं भगवतो गोप्यः श्रुत्वा वाचः सुपेशलाः ।
जहुर्विरहजं तापं तदङ्गोपचिताशिषः ।। १ ।।

तत्रारभत गोविन्दो रासक्रीडामनुव्रतैः ।
स्त्रीरत्नैरन्वितः प्रीतैरन्योन्याबद्धबाहुभिः ।। २ ।।

रासोत्सवः सम्प्रवृत्तो गोपीमण्डलमण्डितः ।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासां मध्ये द्वयोर्द्वयोः ।
प्रविष्टेन गृहीतानां कण्ठे स्वनिकटं स्त्रियः ।। ३ ।।

यं मन्येरन् नभस्तावद् विमानशतसङ्कुलम् ।
दिवौकसां सदाराणामौत्सुक्यापहृतात्मनाम् ।। ४ ।।

ततो दुन्दुभयो नेदुर्निपेतुः पुष्पवृष्टयः ।
जगुर्गन्धर्वपतयः सस्त्रीकास्तद्यशोऽमलम् ।। ५ ।।

वलयानां नूपुराणां किङ्किणीनां च योषिताम् ।
सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलो रासमण्डले ।। ६ ।।

तत्रातिशुशुभे ताभिर्भगवान् देवकीसुतः ।
मध्ये मणीनां हैमानां महामरकतो यथा ।। ७ ।।

पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्भ्रूविलासैः
भज्यन् मध्यैश्चलकुचपटैः कुण्डलैर्गण्डलोलैः ।
स्विद्यन् मुख्यः कबररशनाग्रन्थयः कृष्णवध्वो
गायन्त्यस्तं तडित इव ता मेघचक्रे विरेजुः ।। ८ ।।

उच्चैर्जगुर्नृत्यमाना रक्तकण्ठ्यो रतिप्रियाः ।
कृष्णाभिमर्शमुदिता यद्गीतेनेदमावृतम् ।। ९ ।।

काचित्समं मुकुन्देन स्वरजातीरमिश्रिताः ।
उन्निन्ये पूजिता तेन प्रीयता साधु साध्विति ।
तदेव ध्रुवमुन्निन्ये तस्यै मानं च बह्वदात् ।। १० ।।

काचिद्रासपरिश्रान्ता पार्श्वस्थस्य गदाभृतः ।
जग्राह बाहुना स्कन्धं श्लथद्वलयमल्लिका ।। ११ ।।

तत्रैकांसगतं बाहुं कृष्णस्योत्पलसौरभम् ।
चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्टरोमा चुचुम्ब ह ।। १२ ।।

कस्याश्चिन्नाट्यविक्षिप्त कुण्डलत्विषमण्डितम् ।
गण्डं गण्डे सन्दधत्या अदात्ताम्बूलचर्वितम् ।। १३ ।।

नृत्यन्ती गायती काचित्कूजन्नूपुरमेखला ।
पार्श्वस्थाच्युतहस्ताब्जं श्रान्ताधात्स्तनयोः शिवम् ।। १४ ।।

गोप्यो लब्ध्वाच्युतं कान्तं श्रिय एकान्तवल्लभम् ।
गृहीतकण्ठ्यस्तद्दोर्भ्यां गायन्त्यस्तं विजह्रिरे ।। १५ ।।

कर्णोत्पलालकविटङ्ककपोलघर्म
वक्त्रश्रियो वलयनूपुरघोषवाद्यैः ।
गोप्यः समं भगवता ननृतुः स्वकेश -
स्रस्तस्रजो भ्रमरगायकरासगोष्ठ्याम् ।। १६ ।।

एवं परिष्वङ्गकराभिमर्श
स्निग्धेक्षणोद्दामविलासहासैः ।
रेमे रमेशो व्रजसुन्दरीभि -
र्यथार्भकः स्वप्रतिबिम्बविभ्रमः ।। १७ ।।

तदङ्गसङ्गप्रमुदाकुलेन्द्रियाः
केशान् दुकूलं कुचपट्टिकां वा ।
नाञ्जः प्रतिव्योढुमलं व्रजस्त्रियो
विस्रस्तमालाभरणाः कुरूद्वह ।। १८ ।।

कृष्णविक्रीडितं वीक्ष्य मुमुहुः खेचरस्त्रियः ।
कामार्दिताः शशाङ्कश्च सगणो विस्मितोऽभवत् ।। १९ ।।

कृत्वा तावन्तमात्मानं यावतीर्गोपयोषितः ।
रेमे स भगवांस्ताभिरात्मारामोऽपि लीलया ।। २० ।।

तासामतिविहारेण श्रान्तानां वदनानि सः ।
प्रामृजत्करुणः प्रेम्णा शन्तमेनाङ्गपाणिना ।। २१ ।।

गोप्यः स्फुरत्पुरटकुण्डलकुन्तलत्विड्
गण्डश्रिया सुधितहासनिरीक्षणेन ।
मानं दधत्य ऋषभस्य जगुः कृतानि
पुण्यानि तत्कररुहस्पर्शप्रमोदाः ।। २२ ।।

ताभिर्युतः श्रममपोहितुमङ्गसङ्ग -
घृष्टस्रजः स कुचकुङ्कुमरञ्जितायाः ।
गन्धर्वपालिभिरनुद्रुत आविशद्वाः
श्रान्तो गजीभिरिभराडिव भिन्नसेतुः ।। २३ ।।

सोऽम्भस्यलं युवतिभिः परिषिच्यमानः
प्रेम्णेक्षितः प्रहसतीभिरितस्ततोऽङ्ग ।
वैमानिकैः कुसुमवर्षिभिरीड्यमानो
रेमे स्वयं स्वरतिरत्र गजेन्द्रलीलः ।। २४ ।।

ततश्च कृष्णोपवने जलस्थल-
प्रसूनगन्धानिलजुष्टदिक्तटे ।
चचार भृङ्गप्रमदागणावृतो
यथा मदच्युद्द्विरदः करेणुभिः ।। २५ ।।

एवं शशाङ्कांशुविराजिता निशाः
स सत्यकामोऽनुरताबलागणः ।
सिषेव आत्मन्यवरुद्धसौरतः
सर्वाः शरत्काव्यकथारसाश्रयाः ।। २६ ।।

राजोवाच

संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमायेतरस्य च ।
अवतीर्णो हि भगवानंशेन जगदीश्वरः ।। २७ ।।

स कथं धर्मसेतूनां वक्ता कर्ताभिरक्षिता ।
प्रतीपमाचरद्ब्रह्मन् परदाराभिमर्शनम् ।। २८ ।।

आप्तकामो यदुपतिः कृतवान् वैजुगुप्सितम् ।
किमभिप्राय एतं नः संशयं छिन्धि सुव्रत ।। २९ ।।

श्रीशुक उवाच

धर्मव्यतिक्रमो दृष्ट ईश्वराणां च साहसम् ।
तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा ।। ३० ।।

नैतत्समाचरेज्जातु मनसापि ह्यनीश्वरः ।
विनश्यत्याचरन् मौढ्याद्यथा रुद्रोऽब्धिजं विषम् ।। ३१ ।।

ईश्वराणां वचः सत्यं तथैवाचरितं क्वचित् ।
तेषां यत्स्ववचोयुक्तं बुद्धिमांस्तत्समाचरेत् ।। ३२ ।।

कुशलाचरितेनैषामिह स्वार्थो न विद्यते ।
विपर्ययेण वानर्थो निरहङ्कारिणां प्रभो ।। ३३ ।।

किमुताखिलसत्त्वानां तिर्यङ्मर्त्यदिवौकसाम् ।
ईशितुश्चेशितव्यानां कुशलाकुशलान्वयः ।। ३४ ।।

यत्पादपङ्कजपरागनिषेवतृप्ता
योगप्रभावविधुताखिलकर्मबन्धाः ।
स्वैरं चरन्ति मुनयोऽपि न नह्यमाना-
स्तस्येच्छयाऽऽत्तवपुषः कुत एव बन्धः ।। ३५ ।।

गोपीनां तत्पतीनां च सर्वेषामेव देहिनाम् ।
योऽन्तश्चरति सोऽध्यक्षः क्रीडनेनेह देहभाक् ।। ३६ ।।

अनुग्रहाय भूतानां मानुषं देहमास्थितः ।
भजते तादृशीः क्रीडा याः श्रुत्वा तत्परो भवेत् ।। ३७ ।।

नासूयन् खलु कृष्णाय मोहितास्तस्य मायया ।
मन्यमानाः स्वपार्श्वस्थान् स्वान् स्वान् दारान् व्रजौकसः ।। ३८ ।।
ब्रह्मरात्र उपावृत्ते वासुदेवानुमोदिताः ।
अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यः स्वगृहान् भगवत्प्रियाः ।। ३९ ।।

विक्रीडितं व्रजवधूभिरिदं च विष्णोः
श्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथ वर्णयेद्यः ।
भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं
हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः ।। ४० ।।

स्वस्तिश्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां
संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडावर्णनं
नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ।। ३३ ।।

अथ विधि प्रकरण

तुलसी पूजन व चयन मन्त्र

तुलसी जलार्पण मन्त्रः

श्रियः श्रिये श्रियावासे नित्यं श्रीधरसत्कृते ।
भक्तया दत्तं मया देवि अध्यं गृह्ण नमोऽस्तु ते ।।

तुलसी पूजामन्त्रः

निम्मिता त्वं पुरा देवरचिता त्वं सुरासुरैः ।
तुलसी हर मे पापं पूजां गृह्ण नमोऽस्तु ते ।।

तुलसी स्तुतिः

महाप्रसादजननी सर्व्वसौभाग्यवर्द्धिनी ।
आधिव्याधिहरी नित्यं तुलसि त्वं नमोऽस्तु ते ।।

तुलसी प्रार्थना

श्रियं देहि यशो देहि कीत्तिमायुस्तथा सुखम् ।
बलं पुष्टि तथा धर्मं तुलसि त्वं प्रसीद मे ।।

तुलसी चयन मन्त्र-

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया ।
केशवार्थे विचिन्वामि वरदा भव शोभने ।।

त्वदंगसम्भवैः पत्रः पूजयामि यथा हरिम् ।
तथा कुरु पवित्रांगि कलौ मलविनाशिनि ।।

मोक्षैकहेतो धरणी प्रशस्ते विष्णोः समस्तस्य गुरोः प्रियेति ।
आराधनार्थं वरमञ्जरीकं लुनामि पत्रं तुलसि क्षमस्व ।।

तुलसी आरती

नमो नम: तुलसी कृष्ण प्रेयसी ।
राधा कृष्ण सेवा पाबो एई अभिलाषी ।।

जे तोमार शरण लय, तार वांछा पूर्ण हय।
कृपा करि कर तारे वृंदावनवासी।।

मोर एई अभिलाष, विलास कुन्जे दिओ वास।
नयने हेरिबो सदा, युगल-रूप राशि।।

एइ निवेदन धर, सखीर अनुगत कर।
सेवा-अधिकार दिये, कर निज दासी।।

दीन कृष्णदासे कय, एइ येन मोर हय।
श्री राधागोविन्द प्रेमे सदा येन भासि।।

प्रदक्षिणा मन्त्र

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे।।

भगवद् शयन मन्त्र (विधि)

इस मन्त्र का पाठ करके युगल-मूर्ति को शयन करावें।

आगच्छ शयनस्थानं प्रियाभिः सह केशव ।
दिव्य पुष्पाद्यशय्यायां सुखं विहर माधव ।।

गोविन्द परमानंद योगनिद्रां वितन्यताम् ।
राधया पुष्पशय्यायां दासीगणनिषेवितः ।।

श्रीराधाकृष्णौ निशायां सुकुसुमशयने प्राप्तनिद्रौ स्मरामि ।।

ऐसी भावना करें-
निशाकाल में सुन्दर कुसुमशैय्या पर निद्रा को प्राप्त श्रीश्रीराधाकृष्ण का मैं स्मरण करता हूँ। अनन्तर मंदिर से बाहर आकर द्वार मंगल करके प्रणाम करें।

भगवद् उत्थापन मन्त्र (विधि)

श्री राधाकृष्ण प्रबोधन वाक्य पढ़कर श्रीजी को उठावें-

ईश्वर श्रीहरे कृष्ण देवकीनन्दन प्रभो ।
निद्रां मुञ्च जगन्नाथ प्रभातसमयो भवेत् ।।

गो गोप गोकुलानन्द यशोदानन्दनन्दन ।
उत्तिष्ठ राधया सार्धं प्रातरासीज्जगत्पते ।।

तदनन्तर पूर्व में वर्णित 'श्रीकृष्ण प्रातः स्मरण कीर्तन' का पाठ करें।

भगवद् भोगार्पण मन्त्र (विधि)

अमनिया भोग में तुलसीजी पधराकर श्रीजी के सन्मुख विराजमान करें।

'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'
इस मन्त्र से श्रीजी को जल-गण्डूष (आचमन हेतु जल) प्रदान करें।

तदनन्तर भोग पर धेनु व मत्स्य मुद्रा निर्माण कर तीन-बार मूलमन्त्र का जप करें।

'श्रीकृष्णाय इदं नैवेद्यं कल्पयामि'
कहकर श्रीजी को ग्रास-मुद्रा प्रदर्शित करें।

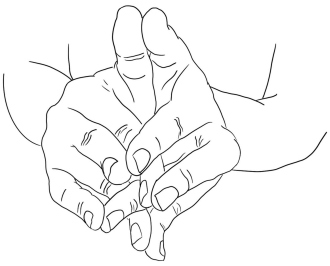

धेनु मुद्रा

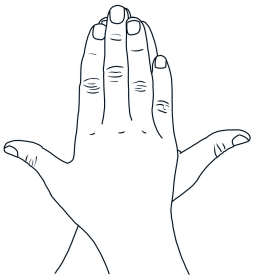

मत्स्य मुद्रा

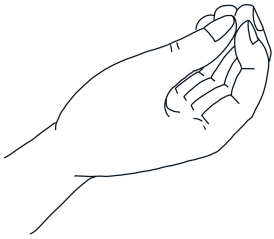

ग्रास मुद्रा

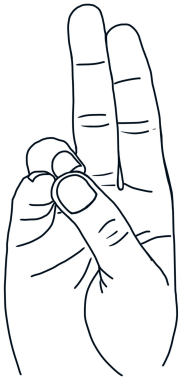

प्राण मुद्रा

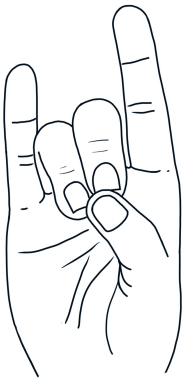

अपान मुद्रा

व्यान मुद्रा

उदान मुद्रा

समान मुद्रा

पंच-प्राण मुद्रा निर्माण कर पंच-प्राण मन्त्रों का पाठ करें-

ॐ प्राणाय स्वाहा ।
ॐ अपानाय स्वाहा ।
ॐ व्यानाय स्वाहा ।
ॐ उदानाय स्वाहा ।
ॐ समानाय स्वाहा ।

तदनन्तर तिरस्करणी (पर्दा) लगाकर कुछ काल तक
श्रीजी को सुख से भोग आरोगने दें, तथा
यह भावना करें कि श्रीजी प्रत्यक्ष रूप से,
अत्यन्त आनन्दपूर्वक, सपरिकर भोग आरोग रहे हैं।

बाहर आकर प्रार्थना करें-

यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलं ।
आवेदितं निवेद्यन्तु तद्गृहाणानुकम्पया ।।

हे प्रभु! हमने भक्तिमात्र से आपको को पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पित किया है,
आप उसे सप्रेम स्वीकार कर हम पर अनुकम्पा करें।

भोग उपरान्त-
'अमृतापिधानमसि स्वाहा'
इस मन्त्र से श्रीजी को पुनः आचमन करा कर भोग उसार लें।

बलिदान मन्त्र (विधि)

श्रीठाकुरजी को भोग अर्पण करने के पश्चात उनके श्रीप्रसाद पर सर्वप्रथम अधिकार उनके पार्षदों और महाभागवत वैष्णवों का होता है। अतः उन्हें बलि (भाग/भेंट) देने का विधान है।

श्रीप्रसाद में से 100वां अथवा 1000वां हिस्सा निकालकर एक पात्र में विराजमान करें और निम्न मन्त्र पढ़कर जल छोड़ दें-

श्रीकृष्णसेवायुक्ताय भद्रसेनाय ते नमः ।।

तत्पश्चात सभी महाभागवत वैष्णवों का आह्वाहन कर उनसे ठाकुरजी के श्रीप्रसाद को ग्रहण करने की प्रार्थना करें-

बलिर्विभीषणो भीष्मः कपिलो नारदोऽर्जुनः ।
प्रह्लादश्चाम्बरीषश्च वसुर्वायुसुतः शिवः ।।
विष्वक्सेनोद्धवाक्रूरः सनकाद्याः शुकादयः ।
श्रीकृष्णस्य प्रसादोऽयं सर्वे गृह्नन्तु वैष्णवाः ।।

परम् वैष्णवों के ग्रहण करने के पश्चात श्रीजी का प्रसाद 'महाप्रसाद' बन जाता है।

महाप्रसाद ग्रहण करने का मन्त्र

महाप्रसादे गोविन्दे नाम ब्रह्मणी वैष्णवे।
स्वल्प पुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते।।

यस्य नाम्ना विनश्यन्ति महापातकराशयः ।
तस्य श्रीकृष्णदेवस्य वयमुच्छिष्ट भोजिनः ।।

विष्णुपादोदक ग्रहण करने का मन्त्र

ॐ चरणं पवित्रं विततं पुराणं
येन पूतस्तरति दुष्कृतानि ।
तेन पवित्रेण शुद्धेन पूताऽपि पाप्मानमरातिं तरेम ।।
लोकस्य द्वारमार्चयत् पवित्रं ज्योतिष्मत् विभ्राजमानं महस्तद् अमृतस्य धारा बहुधा दोहमानं चरणं लोके सुधितां दधातु ।।

भगवद् चरणामृत के प्रति सावधानी-

विष्णोः पादोदकं पीतं कोटिहत्याघनाशनम् ।
तदेवाष्टगुणं पापं भूमौ विन्दुनिपातनम् ।।

भगवान विष्णु का चरणामृत पान करने से एक करोड़ हत्यायें करने का पाप भी नष्ट हो जाता है, परन्तु उस पाप का भी आठ गुणा अधिक पाप भूमि पर एक-बून्द चरणामृत गिराने से लगता है।

श्री राधारमण जी संध्या आरती वन्दना

प्राणधन श्री राधारमण लाल जय जय जय श्री भट्ट गोपाल ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे , उर वैजन्ती माल ।
शोभा उर वैजन्ती माल ॥ प्राणधन...
कानन में मकराकृत कुण्डल , बेंदी झलके भाल ।
शोभा बेंदी झलके भाल ॥ प्राणधन...
घूंघरवाली अलके झलके , बाँके नयन बिशाल ।
शोभा मोही ब्रज की बाल ॥ प्राणधन...
कटि किंकिणी पग नूपुर बाजे , मुरली अधर रसाल ।
बाजे वंशी अधर रसाल ॥ प्राणधन...
श्रीवृन्दावन की कुञ्ज गलिन में , चालत चाल मराल ।
शोभा चालत चाल मराल ॥ प्राणधन...
संग – संग श्री गोपाल भट्ट जू , झलकत प्रेम रसाल ।
बलिजाऊँ ! झलकत प्रेम रसाल ॥ प्राणधन...
श्रीगोपीनाथ प्रभु की छबि निरखत , भक्तन के प्रतिपाल ।
सोभा दासन के प्रतिपाल ॥ प्राणधन...
प्यारो श्री राधारमण लाल जय जय ।
जय श्री भट्ट गोपाल ॥
जय श्रीवृन्दावन रसिक रसाल ।
हरे हरे ! श्रीवृन्दवन रसिक रसाल ॥ प्राणधन...
श्रीचैतन्य जीव उर माल , श्रीरुपसनातन प्रेम रसाल ।
हरे हरे ! भट्ट सनातन प्रेम रसाल ॥ प्राणधन...
इनकी पदरज धारूँ भाल , श्रीगोपीनाथ प्रभु करत निहाल ।
हरे हरे ! श्री राधारमण प्यारो करत निहाल ॥ प्राणधन...

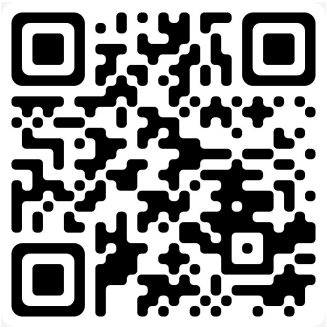

इस पाठावली के शुद्ध-उच्चारण व ऑडियो संस्करण हेतु
ऊपर दिए गए QR Code को स्कैन करें।